बृहद्
सूक्ति-कोश

…क्तियों में नीति के वचन थोड़े शब्दों में गागर में सागर की …ाँति बड़ी सुन्दरता से व्यक्त होते हैं। इनमें उपदेश देने की …टा निराली होती है। ये भावों को सजा-संवार कर सजीव बनाने …वं [illegible] को चमकाने में बड़ी सहायक होती हैं।

—डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेदी

खण्ड तीन
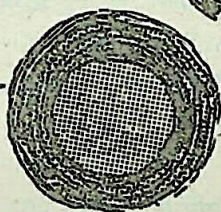
विश्व के लब्ध-प्रतिष्ठ मनीषियों
की विशिष्ट सूक्तियों का संदर्भ-ग्रन्थ

सम्पादक

झरण

आमुख

सूक्तियाँ विश्व साहित्याकाश के दैदीप्यमान उज्ज्वल नक्षत्र ही नहीं अपितु मानव के अन्तराल में व्याप्त उल्लास की तरंगों को उद्वेलित करने वाली ऐसी ज्योति हैं जिसकेप्रकाश मेंबुद्धि और हृदय एक साथ आलोकित होते हैं। यदि ये न हों तो साहित्यनीरस हो जाए और हमारा हृदय स्वर्गिक आनन्द से वंचित हो जाए। जहाँ ये अपने माधुर्य से अन्धकार के आवरण को छिन्न-भिन्न करके उसे प्रकाशित कर सकती हैं, जहाँ ये निराशा के बंधनों में जकड़े हुए पत्रों में समीर की तीव्र गति डाल सकती हैं, जहाँ ये अन्तरतम की असह्य पीड़ा को क्षणमात्र में दूर कर सकती हैं; वहाँ ये गम्भीर से गम्भीर आघात पहुँचाने की भी क्षमता रखतो हैं। इस पर भी यही कहना होगा कि ये सूक्तियाँ मानव सृष्टि में कल्पतरु के समान हैं।

इन सूक्तियों की विशाल छाया में विश्राम कर मानव अपने जीवन पथ की थकान को दूर कर भविष्य की दुर्गम यात्रा को शाँतिपूर्वक पूर्ण कर लेता है। अतः ये सूक्तियाँ मानव जगत् में ईश के समान ही सर्वव्यापी बन गई हैं। इनकी उपदेशात्मक छटा निराली ही है। इनमें नीति के वचन अल्प शब्दों में गागर में सागर के समान अद्वितीयता से व्यक्त होते हैं। हमारी संस्कृत देव भाषा में तो इनका भण्डार है। अन्य विदेशीय भाषाओं में भी इन पर अच्छी पुस्तकें निकली हुई हैं । हिन्दी में भी इन सूक्तियों पर निकली हुई कई पुस्तकें देखने को मिलीं, पर सभी अपने में अपूर्ण-सी ही थीं। हिन्दी में इस कमी को दूर के लिए मैंने यह क्षुद्र सा प्रयास किया है। युग-युग के लब्ध प्रतिष्ठ मनीषियों की सूक्तियों के संकलन

में मेरे दस वर्ष बीते हैं। अब इन्हें कुछ-कुछ पूरा कर पाया हूं। अब मेरा प्रयास वृहत् सूक्ति कोश के रूप में आपके हाथ में है।

इस विशाल संदर्भ ग्रन्थ को पाठकों की सुविधा हेतु बारह खण्डों में विभाजित कर दिया है। वृहत् सूक्तिकोश का प्रत्येक खण्ड अपने में पूर्ण है। इसमें लगभग सभी लब्ध प्रतिष्ठ देशी-विदेशी विद्वानों, कवियों, विचारकों संतों एवं दार्शनिकों की मूल व अनूदित सूक्तियों के रूप में अमरवाणी का संकलन है। इसमें मैंने आधुनिक लेखकों की सूक्तियों को भी उसी आदर से संकलित किया है जिस सम्मान से प्राचीन विचारकों एवं लेखकों की सूक्तियों को। प्रत्येक खण्ड के अंत में विषयों की अनुक्रमणिका के साथ-साथ रचयिताओं की तालिका दे दी गई है। इससे पाठकों को विशेष सुविधा मिलेगी।

वृहत सूक्ति कोश का प्रत्येक खण्ड मेरे कृपालु पाठकों चाहे वे शिक्षार्थी हों, चाहे साहित्यकार हों, चाहे प्राध्यापक हों और चाहे राजनीतिज्ञ हों, के हाथों में से गुजरेगा, ऐसा मेरा अटूट विश्वास है। उनसे केवल मेरी सादर अनुनय यही है कि वे इनमें जो अपूर्णता एवं त्रुटि देखें उसके विषय में मुझे सूचित करने की कृपा करें। इनमें अधिक-से-अधिक संशोधन के लिए उदार भाव से मित्रों के परामर्श का स्वागत करूंगा।

विनीत

शरण

विषय-तालिका

कीर्ति

क्या नदी अपने झाग पर कुछ भी ध्यान देती है ? कीर्ति जीवन की नदी का झाग है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गीतांजलि)

शत्रु द्वारा की गई प्रशंसा सर्वोत्तम कीर्ति है।

—टामस मूर

वह नाम अतिभार स्वरूप है जो कि बहुत शीघ्र ही कीर्ति पा गया हो।

—वाल्टेयर

जिस तरह सागर की गहराई में सीपी के भीतर का मोती परिपक्व होता है, इसी तरह से मानव की कीर्ति कब्र में परिपक्व होती है।

—लाण्डोर

सर्वोच्च कीर्ति प्रतिद्वन्द्वी द्वारा की गई प्रशंसा है।

—टामस मोर

कीर्ति जीवन सरिता का झाग है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

धन्य है वह पुरुष जिसकी कीर्ति उसकी सत्यता से अधिक प्रकाशवान नहीं है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई॥

—तुलसीदास (रामचरित मानस)

अकृत्वा हेलया पादमुच्चैर्मूर्धसु विद्विषाम् ।
कथंकारमनालम्बा कीर्तिर्द्यामधिरोहति ।।

(लीलापूर्वक शत्रुओं के उच्च मस्तक पर पैर बिना रखे ही निरालम्ब कीर्ति कैसे स्वर्ग तक चढ़ सकती है।)

—माघ (शिशुपाल वध)

तुलसी निज करतूति बिनु, मुकुत जात जब कोइ।
गयो अजामिल लोक हरि, नाम सक्यो नहिं धोइ।।

—तुलसीदास

कीर्ति वीरोचित कार्यों का सुगन्ध है।

—सुकरात

हम्मीर राव हँसियों कहै, सदा कौन जग थिर रहै ।
छिन भंग अंग लालच कहा, सुजस एक जुग-जुग रहै ।।

—जोधराज (हम्मीर रासो)

कुकर्म

अपने कुकर्मों का फल चखने में कड़ुवा, परन्तु परिणाम में मधुर होता है।

—जयशंकर प्रसाद (स्कन्दगुप्त)

कुकर्मों का परिणाम कभी शुभ नहीं हो सकता। कुकर्मों के लिए पीड़ा और क्लेश अवश्य भोगना पड़ेगा।

—स्वामी रामतीर्थ

कुकर्म मनुष्य पर काला आवरण डाल देता है।

—अज्ञात

कुकर्म हमें ईश्वर से सदैव पृथक रखता है।

—रस्किन

हरेक कुकर्म उस तार को तोड़ देता है जो हमारे और ईश के मध्य में लगा हुआ है।

—रस्किन

यदि मुझे यह विश्वास हो जाय कि भगवान मुझे क्षमा कर देंगे और पुरुष मेरे कुकर्म को न जान सकेंगे, इस अवस्था में भी मुझे कुकर्म करते हुए लज्जा आएगी।

—प्लेटो

कुछ कुकर्म बहुत-से गुणों को दूषित करने के लिए पर्याप्त हैं।

—प्लूटार्क

कुपुत्र

एकेन शुष्क वृक्षेण दह्यमानेन वह्निना ।
दह्यते तद्वनं सर्वं कुपुत्रेण कुलं यथा ॥

(अग्नि से जलते हुए एक ही सूखे वृक्ष से समस्त वन इस तरह जल जाता है, जैसे एक ही कुपुत्र के सम्पूर्ण कुल।)

—चाणक्य

जो रहिम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय ।
बारे उजियारो करै, बढ़ै अंधेरो होय ॥

—रहीम

जनक वचन निदरत निडर, बसत कुसंगति माँहि ।
मूरख सो सुत अधम है, तेंहि जनमे सुख नाँहि ॥

—विदुर

o

कुमति

संगति सुमति न पावही, परे कुमति के धंध ।
राखेहु मेलि कपूर में, हींग न होत सुगंध ॥

—बिहारी

कुमति कीन्ह सब विश्व दुखारी।

—तुलसीदास (रामचरित मानस)

जहं कुमति तहं विपति निधाना॥

—तुलसीदास (रामचरित मानस)

कुरूपता

कुरूपता शीलयुता विराजते।
(कुरूपता सुशीलता से सुशोभित होती है।)

—चाणक्य

विद्या रूपं कुरूपाणां। क्षमा रूपं तपस्विनाम्॥
(कुरूप मानवोंका सौन्दर्य विद्या है। तपस्वियों का सौन्दर्य क्षमा है।)

—चाणक्य

कुरूपता विधाता का ऐसा अभिशाप है, जिसे हम अपने सद्गुणों द्वारा दूर कर सकते हैं।

—अज्ञात

कुल मर्यादा

कुल मर्यादा युगों में बनती है और क्षण में बिगड़ जाती है।

—प्रेमचन्द (प्रतिज्ञा)

कुल मर्यादा संसार की सबसे उत्तम वस्तु है। उस पर प्राण तक न्योछावर कर दिए जाते हैं।

—प्रेमचन्द (बहिष्कार)

कुल मर्यादा में आत्मरक्षा की बड़ी शक्ति होती है।

—प्रेमचन्द (बैर का अंत)

कुल की प्रतिष्ठा नम्रता और सद्व्यवहार से होती है। हेकड़ी और रुखाई से नहीं।

—प्रेमचन्द

अपनी कुल मर्यादा के मिटाने वाले हम हैं। हम अपनी कायरता से प्राण भय से, लोक निन्दा के डर से, झूठे संतान प्रेम से, अपनी बेहयाई से, आत्म गौरव की हीनता से, ऐसे पापाचरणों को छिपाते हैं, उन पर परदा डाल देते हैं। इसी का यह परिणाम है कि दुर्बल आत्माओं का साहस इतना बढ़ गया है।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

सत्पुरुष अपनी कुल मर्यादा के लिए अपने को बलिदान कर देते हैं।

—अज्ञात

जिस पेट को रोटी मयस्सर नहीं उसके लिए मरजाद और इज्जत सब ढोंग है।

—प्रेमचन्द (गोदान)

कुलीन

वरये कुलजां प्राज्ञो विरुपामपि कन्यकाम्।
रूप शीलां न नीचस्य विवाहः सदृशे कुले।।

(कुलीन कन्या कुरूप भी हो तो विवाह कर लो, सुन्दर किन्तु नीच संस्कारों वाली कन्या से कदापि विवाह न करो।)

—चाणक्य

महान् और उच्च वंश से उत्पत्ति स्वयं ही उच्च सम्मान और विशेष गौरव है। जो इन्हीं के अनुसार जीवनयापन करता है सर्वोच्च सम्मान का पात्र होता है और जो नहीं करता वह सबसे बड़ा अपयश का पात्र होता है।

—कोल्टन

भले वंश को पुरुष सो, निहुरै बहु धन पाय।
नवै धनुष सद वंश को, जिहि द्वै कोटि दिखाय।।

—वृन्द (सतसई)

छिन्नोपि चन्दनतरुर्न जहाति गंधं ।
वृद्धोपि वारणपतिर्न जहाति लीलाम् ।।
यन्त्रार्पितो मधुरतां न जहाति चेक्षुः ।
क्षीणोपि न त्यजति शीलगुणां कुलीनः ।।

(जैसे कटा हुआ चंदन का वृक्ष सुगन्धि को नहीं छोड़ देता, वृद्ध हो जाने पर भी गजराज अपनी मंद गति को नहीं छोड़ता, कोल्हू में पेरी हुई ईख माधुर्य नहीं छोड़ देती वैसे ही दरिद्र हो जाने पर भी कुलीन सुशीलता आदि गुणों को नहीं त्यागता ।)

—चाणक्य

कुशल-कुशलता

भूतानां हि क्षयिषु करणेष्वाद्यमाश्वास्यमेतत् ।
(काल सब जीवों के सिर पर है । अतः पहले कुशल पूछना चाहिए ।)

—कालिदास (मेघदूत)

विरोधि वचसोमूकान् वागीशानपि कुर्वते ।
जडानप्यनु लोभार्थान् प्रवाचः कृतिनां गिरः ।।

(कुशल की वाणी बड़े-बड़े विरोधी वक्ताओं को भी बिल्कुल मूक बना देती है और अपने पक्ष में बोलने वाले मंदमतियों को भी निपुण वक्ता बना देती है ।

—माघ (शिशुपाल वध)

आत्मादेशः परज्यानिर्द्वयं नीति रितीयती ।
तदूरीत्य वृतिभिवचिस्पत्यं प्रतायते ।।

(अपनी प्रगति और शत्रु का विनाश—यही दो नीति की बातें हैं । (इनके अतिरिक्त अन्य बात नीति शास्त्र में नहीं है) इन्हीं दोनों बातों को अंगीकार कर कुशल पुरुष अपनी वाक्चतुरता का विस्तार करते हैं ।)

कुशल तैराक जहाँ धारा को अनायास ही पार कर जाते हैं, अनाड़ियों का दल वहाँ उद्याम भंगिमा में नीचे के कीचड़ को आलोड़ित करके पानी को गंदला करते रहते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य में नवीनता)

(कार्य) कुशल मानव के लिए यश और धन की कमी नहीं।

—अज्ञात

मनुष्यों के साथ व्यवहार करने की कुशलता वैसी ही क्रेय वस्तु है जैसी कि चीनी अथवा कॉफी।

—जे० डी० राकफेलर

कुशासक

कंटक करि करि परत गिरी साखा सहस खजूरि।
मरहिं कुनृप करि करि कुनय सों कुचालि भव भूरि॥

—तुलसीदास

वह शासक अनाचारी है, जो अपनी इच्छा के अलावा कोई नियम नहीं जानता।

—वाल्टेयर

कुशासन के प्रति विद्रोह करना भगवान के आदेश का पालन करना है।

—फ्रैंकलिन

कुशासन

चढ़े वघूरे चंग ज्यों, म्यान जो सोक समाज।
करम धरम सुख सम्पदा, त्यों जानिए कुराज॥

—तुलसीदास

जासु राजु प्रिय प्रजा दुखारी
सो नृप अवसि नरक अधिकारी,

—तुलसीदास (रामचरित मानस)

राज करत बिनु काजहीं, करँहि कुचालि कुसाजि।
तुलसी ते दसकन्ध ज्यों, जैहें सहित समाजि ॥

—तुलसीदास

राज करत बिनु काजहीं, ठठहिं जे क्रूर कुठार।
तुलसी ते कुरुराज ज्यों, जइहैं बारह बांट ॥

—तुलसीदास

जोर जुल्म करने वाली बादशाहत बादल की छांह की तरह टिकाऊ नहीं होती।

—अज्ञात

कुनियम सब से निकृष्ट प्रकार का कुशासन है।

—बर्क

जहाँ कानून का अंत है वहाँ कुशासन प्रारम्भ होता है।

—विलियम पिट

कुसंग

औछे को सतसंग, रहिमन तजहु अंगार ज्यों।
तातो जारै अंग, सीरो पै कारो तगै ॥

—रहीम (रहिमन विलास)

रहिमन उजली प्रकृति को, नहीं नीच का संग।
करिया बासन कर गहे, कारिख लागत अंग ॥

—रहीम

बरु मल वास नरक कर ताता। दुष्ट संग जनि देइ विधाता।

—तुलसीदास (रामचरित मानस)

को न कुसंगति पाय न साईं। रहै न नीच मते चतुराई॥

—तुलसीदास (रामचरित मानस)

गुणा गुणज्ञेषु गुणा भवन्ति
ते निर्गुणं प्राप्य भवन्ति दोषाः।
आस्वाद्यतोयाः प्रभवन्ति नद्यः
समुद्रमासाद्य भवन्त्यपेयाः॥

(गुणज्ञों के पास गुण ही गुण होते हैं, लेकिन वे ही निर्गुणियों के समीप रहकर दोष हो जाते हैं। नदियाँ स्वभावतः मधुर जलवाली होती है, किन्तु सागर के साथ मिलने से खारे जलवाली हो जाती है।)

—अज्ञात

बसि कुसंग चाहत कुसल यह रहीम अफसोस।
महिमा घटी समुद्र की रावन बसा परोस॥

—रहीम (रहीम विलास)

आप अकारज आपनो, करत कुसंगति साथ।
पांय कुल्हाड़ा देत है, मूरख अपने हाथ॥

—वृन्द (सतसई)

होत सुसंगति सहज सुख, दुःख कुसंग के थान।
गंधी और लुहार की, देखौ बैठि दुकान॥

—अज्ञात

दाग जो लागा नील का, सौ मन साबुन धोय
कोटि जतन पर बोधिए, कागा हंस न होय॥

—महात्मा कबीरदास

मारी मरै कुसंग की केरा के ढिग बेर।
वह हालै वह अंग चिरै विधि ने संग निवेर॥

—महात्मा कबीरदास

हानि कुसंग सुसंगति लाहू ।
लोकहू वेद विदित सब काहू ॥

—तुलसीदास

जो रहिम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग ।
चंदन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग ॥

—रहीम (रहीमन विलास)

रहिमन नीचन संग बसि, लगत कलंक न काहि ।
दूध कलारिन हाथ लखि, मद समुझहिं सब ताहि ॥

—रहीम

नीच संग ते सुजन की, मानि हानि ह्वै जाय ।
लोह कुटिल के संग तें, सहै अगिन घन घाय ॥

—दीनदयाल गिरि (गिरि ग्रंथावली)

कुसमय

जो रहीम दीपक दशा, तिय राखत पट कोट ।
समय परे ते होत है, वाही पट की चोट ॥

—रहीम

तुलसी पावस के समय, धरी कोकिला मौन ।
अब तो दादुर बोलहिं, हमें पूछिहिं कौन ॥

—तुलसीदास

जेहि अंचल दीपक दुर्यो हन्यो सो ताही गात ।
रहिमन कुसमय के परे मित्र शत्रु ह्वै जात ॥

—रहीम

रहिमन असमय के परे, हित अनहित ह्वै जाय ।
वधिक वधै मृग बान सों, रुधिरै देत बताय ॥

—रहीम

रहिमन चुप ह्वै बैठिए देखि दिनन को फेर।
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहैं देर ॥

—रहीम

कुसमय में साहस भी साथ छोड़ देता है।

—अज्ञात

कूटनीति

कूटनीति मानवीय गुणों के विपरीत एक ऐसा दुर्गुण है, जिसने विश्व के बहुत बड़े अंश को दासता की शृंखला में जकड़ रखा है और जो मानवता के विकास में सबसे बड़ी बाधा बना हुआ है।

—रोमां रोलां

घृणिततम बात को अति सुन्दर ढंग से कहना और करना ही कूट नीति है।

—गोल्डबर्ग

कृतघ्न-कृतघ्नता

अरी नीच कृतघ्नते !
पिच्छल शिला संलग्न,
मलिन काई-सी करेगी
हृदय कितने भग्न ?

—जयशंकर प्रसाद (कामायनी)

दत्तं देवेन यत् तुभ्यं तदर्थं स्वकृतज्ञताम् ।
ब्रूहि तंम परमात्मानं, मा भूत्तेऽत्रकृतघ्नता ॥

(प्रभु ने जो कुछ तुम्हें दिया है, तुम्हें चाहिए कि उसके लिए प्रभु के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करो। इस विषय में तुम्हें कृतघ्न नहीं होना चाहिए।

—वाल्मीकि (रामायण)

कृतार्था ह्यकृतार्थानां मित्राणां न भवन्ति ये।
तान्मृतानपि क्रव्यादाः कृतघ्नान्नोमुञ्चते ॥

(जो अपना स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर अपने मित्रों के कार्य को पूर्ण करने की परवाह नहीं करते उन कृतघ्न पुरुषों के मरने पर माँसाहारी जन्तु भी उनका माँस नहीं खाते।)

—वाल्मीकि (रामायण)

कृतघ्न पुत्र का होना, सर्प के दंत से भी अधिक तेज होता है।

—शेक्सपियर

कृतज्ञता

यदि तुम किसी क्षुधा से पीड़ित श्वान को उठा लो और उसे देख-भाल से खुश करो, तो वह तुम्हें कदापि न काटेगा। मानव और श्वान में यही अन्तर है।

—मार्क ट्वेन

जब कभी किसी निर्धन व्यक्ति में मैं अधिक कृतज्ञता पाता हूँ तो मुझे यकीन हो जाता है यदि वह धनी होता तो उसमें उतनी ही दानशीलता होती।

—पोप

जैसे नदियाँ अपने जल को सागर में वहा कर ले जाती हैं जहाँ से वह पहले आया था, इसी प्रकार कृतज्ञ मानव को प्रसन्नता होती है जब वह उस लाभ को वहाँ ही पहुँचा देता है जहाँ से उसने प्राप्त किया था।

—अज्ञात

कृतज्ञता का बंधन अमोघ है।

—जयशंकर प्रसाद (चन्द्रगुप्त)

कृतज्ञता पाश है, मनुष्य की दुर्वलताओं के फंदे उसे और भी दृढ़ करते हैं।

—जयशंकर प्रसाद (चन्द्रगुप्त)

अनुग्रह लेने से मनुष्य कृतज्ञ होता है। कृतज्ञता परतंत्र बनाती है।

—जयशंकर प्रसाद (सालवती)

कृतज्ञ और उल्लसित हृदय से की गई अर्चना भगवान् को सबसे अधिक प्रिय है।

—प्लूटार्क

स्वर्ग की ओर कृतज्ञपूर्ण भावना स्वयं ही एक प्रार्थना है।

—लेसिंग

कृतज्ञता एक कर्त्तव्य है जिसे पूरा करना चाहिए किन्तु जिसे पाने का किसी को अधिकार नहीं है।

—रूसो

प्रभु अपने दिए पुष्पों के बदले कृतज्ञता चाहता है, सूर्य और पृथ्वी के विषय में नहीं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

कृतज्ञता हृदय की स्मृति है।

—कहावत

कृतज्ञता मित्रता को चिरस्थायी रखती है और नए मित्र बनाती है।

—कहावत

ऽ

केन्द्र

आत्म-ज्ञान का सम्पादन करना और आत्म-केन्द्र में स्थिर रहना मनुष्य मात्र का सबसे पहला और प्रधान कर्त्तव्य है।

— स्वामी रामतीर्थ

अपना केन्द्र अपने से बाहर मत बनाओ, अन्यथा ठोकरें खाते रहोगे।

—स्वामी रामतीर्थ

कोयल

आम्र का स्वर्गीय रस पीकर भी कोयल को गर्व नहीं होता, पर कीचड़ का पानी पीकर ही मेंढक टर्राना शुरू कर देता है।

—अज्ञात

गुन के ग्राहक सहस नर, विनु गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय॥

—गिरिधर कविराय

कोकिलानां स्वरोरूपं, नारी रूपं पतिव्रतं।
विद्या रूपं कुरुपाणां क्षमा रूपं तपस्विनाम्॥

(कोकिलाओं का रूप स्वर होता है, स्त्री का रूप पतिव्रत धर्म है, कुरूप मानव का रूप विद्या होती है और तपस्वियों का रूप क्षमा है।)

—चाणक्य

कागा काको धन हरै, कोयल काको देय।
मीठे वचन सुनाय के, जग को वश कर लेय॥

—अज्ञात

क्रांति-क्रांतिकारी (दे० विप्लव)

क्रान्ति शांति नहीं है। उसे हिंसा में से ही चलना पड़ता है, वही उसका घर है और वही उसका अभिशाप।

शरच्चन्द्र (अधिकार)

विश्व में कोई भी क्रांति कहीं सफल नहीं होती जब तक उसके पीछे बाहुबल न हो।

—शरच्चन्द्र (अधिकार)

क्रान्तियाँ छोटी-छोटी बातों के विषय में नहीं होती, किन्तु छोटी-छोटी बातों से उत्पन्न होती हैं।

—अरस्तू

यह क्रान्ति है कि तुम करोगे, हिंसा से हिंसा का मर्दन ?
क्रांतिवाद क्या यही कि घहरे इधर-उधर तोपों का गर्जन ?

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (हम विषपायी जनम के)

क्रांति का उदय सदैव ही पीड़ितों के हृदय एवं डरे हुए व्यक्तियों के अन्तःकरण में हुआ करता है।

—अज्ञात

राजनीतिक विप्लव विश्व के विकास में एक नया युग लाता है।

—वेन्डेल फिलिप्स

क्रांतिकारी की नस-नस में भगवान् ने ऐसी आग जला दी है कि उन्हें चाहे जेल में ठूँस दो, चाहे सूली पर चढ़ा दो—कह न दिया कि पंचभूतों को सौंपने के सिवा और कोई सजा ही लागू नहीं होती। न तो इनमें दया-माया है, न धर्म-कर्म ही मानते हैं।

—शरच्चन्द्र (अधिकार)

स्वाधीनता के संग्राम में विप्लव ही अपरिहार्य मार्ग नहीं है। जो लोग यह समझते हैं कि दुनिया में और सब कामों के लिए आयोजन का प्रयोजन है, केवल विप्लव ही ऐसा काम है जिसमें तैयारी की ज़रूरत नहीं होती—उसे शुरू कर देने से ही चल जाता है, वे और चाहे जितना कुछ जानें, विप्लव तत्त्व की कोई खबर नहीं जानते।

—शरच्चन्द्र (तरुणों का विद्रोह)

किसी भी देश में केवल विप्लव के लए ही विप्लव नहीं लाया जाता। अर्थहीन अकारण विप्लव की चेष्टा में केवल रक्तपात ही होता है, और कोई फल नहीं प्राप्त होता। विप्लव की सृष्टि मनुष्य के मन में होती है केवल रक्तपात में नहीं।

—शरच्चन्द्र (तरुणों का विद्रोह)

क्रांति हमेशा द्रुतगामिनी होती है।

—वाल्टेयर

इसके सिवा हम क्रांतिकारी हैं, पुराने का मोह हम लोगों में नहीं है। हमारी दृष्टि, हमारी गति, हमारा लक्ष्य, सिर्फ सामने की ओर है। पुराने को ध्वंस करके ही तो हमें रास्ता बनाना पड़ता है। जीर्ण और मृत ही अगर रास्ता रोके रहेंगे तो हमारे अधिकार के दावे को रास्ता कैसे मिलेगा ?

—शरच्चन्द्र (अधिकार)

जो चिंगारी शहर भर को जलाकर भस्म कर देती है वह आकार में कितनी बड़ी होती है ? शहर जब जलता है तब अपना ईंधन आप ही इकट्ठा करके भस्म होता रहता है—उसके भस्म होने की सामग्री उसी में संचित रहती है। विश्व विधान के इस नियम का कोई भी राजशक्ति किसी भी दिन व्यतिक्रम नहीं कर सकती।

—शरच्चन्द्र (अधिकार)

क्रांतिकारी—देश की मिट्टी इनकी देह का माँस है, देश का पानी इनकी नशों का खून है—सिर्फ देश की मिट्टी-पानी ही नहीं, देश के पहाड़ पर्वत, वन-जंगल, सूर्य-चन्द्र, नदी-नाले, छाया-प्रकाश जो कुछ भी हैं, सबको मानो अपने सब अंगों से वे सोख लेना चाहते हैं। शायद इन्हीं में से किसी ने किसी सतयुग में पहले-पहल जननी-जन्मभूमि शब्द का आविष्कार किया गया था।

—शरच्चन्द्र (अधिकार)

क्रांति बनाई नहीं जाती, वह स्वयं आती है।

—वेन्डेल फिलिप्स

क्रांति सभ्यता की जननी है।

—विक्टर ह्यूगो

क्रांति कभी पीछे की ओर नहीं जाती।

—एमर्सन

जब आर्थिक परिवर्तन की उन्नति बहुत अधिक बढ़ जाती है, पर शासन तंत्र जैसे का तैसा बना रहता है, तब दोनों के मध्य बहुत बड़ा अन्तर पड़ जाता है। बहुधा यह अन्तर एक आकस्मिक परिवर्तन से दूर होता है, जिसे क्रांति कहते हैं।

—जवाहरलाल नेहरू

क्रांतिकारी की बनावट में एक विराट, व्यापक प्रेम की सामर्थ्य तो आवश्यक है ही ? साथ ही उसमें एक और वस्तु नितान्त आवश्यक, अनिवार्य है—घृणा की क्षमता, एक कभी न मरने वाली, जला डालने वाली, घोर मारक, किन्तु इतना सब होते हुए भी एक तटस्थ, सात्विक घृणा की क्षमता, यानी ऐसी घृणा जिसका अनुभव हम अपने सचेतन मस्तिष्क से करते हैं, ऐसी नहीं जो कि हमें ही भस्म कर डालती है और पागल करके अपना दास बना लेती है।

अज्ञेय (शेखर : एक जीवनी भाग-१)

क्रांति अति हानिकारक कूड़े के ढेर के समान है जिससे उत्तमोत्तम वानस्पतिक पैदावार होती है।

—नेपोलियन

क्रूरता

शत्रु को दुःखी देखना और घृणित उपाय से बल प्रयोग करने को क्रूरता कहते हैं।

—जयशंकर प्रसाद (सज्जन)

क्रूरता देवोपम मानवों में दानवी प्रवृत्ति है।

—अज्ञात

क्रूरता अत्याचारिणी है जो सदैव भय के साथ रहती है।

—कहावत

क्रोध

क्रोध के आवेश में नेकियाँ बहुत याद आती हैं।

—प्रेमचन्द (गोदान)

क्रोध निरुत्तर होकर पानी हो जाता है। या यूँ कहिए कि आँसू अव्यक्त भावों ही का रूप है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

क्रोध को विनय निगल सकता है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

निर्बल क्रोध उदार हृदय में करुणा का भाव उत्पन्न कर देता है।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

अनुचित क्रोध में सोई हुई आत्मा को जगाने का विशेष अनुराग होता है।

— प्रेमचन्द (सेवासदन)

क्रोध में मधुर स्मृतियों का लोप हो जाता है।

—प्रेमचन्द (लांछन)

क्रोध बहुधा विरक्ति का रूप धारण कर लिया करता है।

—प्रेमचन्द (लांछन)

क्रोध में मनुष्य अपना ही माँस काटने लगता है।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

क्रोध को दुर्वचन से विशेप रुचि होती है।

—प्रेमचन्द (प्रेमाश्रम)

क्रोध प्रत्याघात की सामर्थ्य का द्योतक है।

—प्रेमचन्द (प्रेमाश्रम)

क्रोध में आदमी अपने मन की बात नहीं कहता। वह केवल दूसरे का दिल दुखाना चाहता है।

—प्रेमचन्द (प्रेमाश्रम)

क्रोधो वैवस्तो राजा ।
(क्रोध यमराज है।)

—चाणक्य

क्रोध और घृणा उस पर होती है जो अपने होश में हो। पागल आदमी तो दया ही का पात्र है।

—प्रेमचन्द (निर्मला)

क्रोध अत्यन्त कठोर होता है। वह देखना चाहता है कि मेरा एक वाक्य निशाने पर बैठता है या नहीं, वह मौन को सहन नहीं कर सकता। उसकी शक्ति अपार है, ऐसा कोई घातक शस्त्र नहीं है, जिससे बढ़कर काट करनेवाले यंत्र उसकी शस्त्रशाला में न हों, लेकिन मौन वह मंत्र है, जिसके आगे उसकी सारी शक्ति विफल हो जाती है। मौन उसके लिए अजेय है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

अनाथों का क्रोध पटाखे की आवाज़ है, जिससे बच्चे डर जाते हैं और असर कुछ नहीं होता।

—प्रेमचन्द (गरीब की हाय)

दसो दिसा महुं क्रोध की, उठी अपरबल आगि।
सीतल संगत साधु की, तहाँ उबरिए भागि॥

—महात्मा कबीरदास

कोटि परम लागे रहैं, एक क्रोध की लार।
किया कराया सब गया, जब आया हंकार॥

—महात्मा कबीरदास

सञ्चितस्यापि महतो वत्स क्लेशेन मानवैः।
यशसस्त पसश्चैव क्रोधो नाशकरः परः॥
(वत्स! मानव द्वारा बहुत क्लेश से संचित किया हुआ यश और तप को भी क्रोध सर्वथा विनष्ट कर डालता है।)

—विष्णु पुराण

क्रोध के आवेग में सौजन्य का चिह्न भी शेष नहीं रहता।

—प्रेमचन्द (ममता)

अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुसपदां।
भवन्ति वश्याः स्वयमेव देहिनः।।
अमर्ष शून्येन जनस्य जन्तुना।
न जात हार्देन न विद्वेषादरः।।

(सफल क्रोधी पुरुष की आपत्ति दूर करने हेतु मानव स्वयं ही अनुकूल हो जाते हैं; किन्तु क्रोधरहित पुरुष को न मित्र से सम्मान मिलता है और न शत्रु ही डरता है।)

—भारवि

क्रोध की सर्वोत्तम ओषधि विलम्ब है।

—सेनेका

क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृति विभ्रमः।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशा प्रणश्यति।।

(क्रोध से मूढ़ता पैदा होती है, मूढ़ता से स्मृति भ्रान्त हो जाती है, स्मृति भ्रान्त होने से बुद्धि नष्ट हो जाती है और बुद्धि नष्ट होने पर प्राणी स्वयं नष्ट हो जाता है।)

—श्रीकृष्ण (गीता)

प्रणिपात प्रतीकारः संरम्भो हि महात्मनाम्।

(महात्माओं के क्रोध की शांति उनको नमस्कार करने से होती है।)

—कालिदास

अवक्रोधेन ज़िने क्रोधं, असाधुं साधुना जिने।

(इन्सान को चाहिए क्रोध को दया से और बुराई को भलाई से विजय करे।)

—गौतम बुद्ध

बुद्धिमानों ने अपनी लौकिक उन्नति, पारलौकिक सुख और मुक्ति प्राप्त करने के लिए क्रोध पर विजय प्राप्त की है।

—युधिष्ठिर

क्रोध एक प्रचण्ड अग्नि है, जो मनुष्य इस अग्नि को वश में कर सकता है वह उसको बुझा देगा। जो मनुष्य अग्नि को वश में नहीं कर सकता वह स्वयं अपने को जला लेगा।

—महात्मा गांधी

जब क्रोध में हो तो दस बार सोचकर बोलिये, जब ज्यादा क्रोधित अवस्था में हो तो हजार बार सोचिये।

—जेफरसन

क्रोध मूर्खता से शुरू होता है और पश्चात्ताप पर खत्म होता है।

—पैथागोरस

क्रोध मस्तिष्क के दीपक को बुझा देता है।

—इंगरसोल

क्रोध से वही मानव सबसे अच्छी तरह बचा रहता है जो ध्यान रखता है कि भगवान उसे हर समय देख रहा है।

—प्लेटो

क्रोध के सिंहासन पर बैठते ही बुद्धि वहाँ से खिसक जाती है।

—एम० हेनरी

मानव बहुधा अपने विवेक की पूर्ति क्रोध द्वारा पूर्ण कर लेता है।

—एलबर

जो मनुष्य अपने क्रोध को अपने ही ऊपर झेल लेता है वह दूसरों के क्रोध से बच जाता है।

—सुकरात

जो मन की पीड़ा को स्पष्ट रूप में कह नहीं सकता, उसी को क्रोध अधिक आता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (अनाथ)

जिसके हृदय समीप है
वही दूर जाता है;
और क्रोध होता उस पर ही
जिससे कुछ नाता है।

—जयशंकर प्रसाद (कामायनी)

माना किन्तु महापमान अपना जी में उन्होंने इसे,
क्रोधाधिक्य विचारयुक्त रखता संसार में है किसे?

—मैथिलीशरण गुप्त (शकुन्तला)

महा भयंकर कोप के, ही सब थे परिणाम।
वसुधा में जितने हुए, बड़े बड़े संग्राम॥

—अयोध्यासिंह उपाध्याय (हरिऔध सतसई)

बनत क्रोध जित निबल नर, धारि छमा अभिराम।
करत कलंकित क्लीव ज्यौं, ब्रह्मचर्य व्रत नाम॥

—वियोगी हरि (वीर सतसई)

क्रोधः प्राणहरः शत्रुः क्रोधोमितमुखो रिपुः।
क्रोधोऽसि सुमहातीक्ष्णः सर्वं क्रोधोऽपकर्षति॥
तपते यतते चैव यच्चदानं प्रयच्छति।
क्रोधेन सर्वंहरति तस्मात् क्रोधं विवर्जयेत्॥

(क्रोध प्राणनाशक शत्रु है, क्रोध अपरिमित मुख वाला वैरी है, क्रोध बड़ी तेज धार का खड्ग है, क्रोध सब कुछ हर लेता है, मानव जो तप, संयम और दान आदि करता है, उस सबको वह क्रोध के कारण नष्ट कर डालता है। अतः क्रोध को त्यागना ही श्रेयस्कर है।)

—वामन पुराण

नाकार्यमस्ति क्रुद्धस्य नावाच्यं विद्यते क्वचित्।

(क्रोधी के सामने अकार्य और अवाच्य जैसा कुछ नहीं रहता। अर्थात् वह कुछ भी कर सकता है और कुछ भी बोल सकता है।)

—वाल्मीकि रामायण

यत् क्रोधनो यजति यच्च ददाति नित्यं।
यद्वा तहस्तपति यच्च जुहोति तस्य॥
प्राप्नोति नैवकिमपीह फलं हि लोके।
मोघं फलं भवति तस्य हि कोपनस्य॥

(क्रोधी मानव जो कुछ पूजन करता है, प्रतिदिन जो दान करता है, जो तप करता है और जो हवन करता है, उसका उसे इस लोक में कोई फल नहीं मिलता। उस क्रोधी के सभी फल वृथा होते हैं।)

(वामन पुराण)

अपकारिणि कोपश्चेत्कोपे कोपः कथं न ते ?

(यदि तू अपकार करने वाले पर क्रोध करता है,तो क्रोध पर ही क्रोध क्यों नहीं करता, जो सबसे अधिक अपकार करनेवाला है।)

—याज्ञवल्क्योपनिषद्

यदग्निरापो अदहत्।

(क्रोध रूपी अग्नि जीवन रस को जला देती है।)

—अथर्ववेद

क्रुद्धः पाप न कुर्यात् कः क्रुद्धो हन्याद् गुरुनपि।

(क्रोध से उन्मत्त मानव कौन-सा पाप नहीं कर डालता, वह स्व-गुरु जनों की भी हत्या कर डालता है।

—वाल्मीकि रामायण

क्रुद्धो हि संमूढ़ः सन् गुरु आक्रोशति।

(मानव क्रोध में पागल होकर बड़ोंको भी गाली बकने लग जाता है।

—श्रीकृष्ण (गीता)

पव्वयराइसमाणं कोहं अणुपविट्ठे जीवे।
कालं करेइ णोरइएसु उववज्जति॥

(गिरि की दरार के समान जीवन में कभी नहीं मिटनेवाला उग्र क्रोध आत्मा को नरक गति की ओर ले जाता है।)

—महावीर स्वामी (स्थानांग)

क्रुद्धो···सच्चं शीलं विणयं हणेज्ज।

(क्रोध में अन्धा हुआ व्यक्ति सत्य, शील और विनय का नाश कर डालता है।)

—महावीर स्वामी (प्रश्न व्याकरण सूत्र)

जे ये चंडे मिए थद्धे, दुव्वाई नियडी सढे।
वूज्झइ से अविणीयप्पा कट्ठं सोयगयं जहा॥

(जो मनुष्य क्रोधी, अविवेकी, अभिमानी, दुर्वादी कपटी और धूर्त है, वह जगत् के प्रवाह में वैसे ही बह जाता है, जैसे जल के प्रवाह में लकड़ी।)

—महावीर स्वामी (दशवैकालिक)

अप्पाणं पि न कोवए।

(अपने आप पर भी कभी क्रोध न करो।)

—महावीर स्वामी (उत्तराध्ययन)

कोह विजएणं मद्दवं जणयई।

(क्रोध को जीत लेने से क्षमा भाव जागृत होता है।)

—महावीर स्वामी (उत्तराध्ययन)

पासम्मि वहिणिमायं, सिसुंपि इणेइ कोहंधो।

क्रोध में अन्धा मानव समीप खड़ी माँ, बहन और बच्चे को भी मारने लग जाता है।)

—वसुनन्दि श्रावकाचार

कोवेण रक्खसो वा, णुराण भीमोणरो हवदि।

(क्रोधी मानव राक्षस के समान भयंकर बन जाता है।)

—भगवती आराधना

रोसेण रुद्दहिदओ, णारगसीलोणरो होदि।

(क्रोध से मानव का हृदय रौद्र बन जाता है। वह मानव होने पर भी नरक के जीव जैसा आचरण करने लग जाता है।)

—भगवती आराधना

क्रोध सदा अपनी नासमझी से आता है।

—जैनेन्द्र (विवर्त)

जब तुम अत्यधिक क्रोध में हो तब यह विचारो कि मनुष्य जीवन कितना क्षणिक है।

—मार्क्स आरेलियस

अग्नि उसी को जलाती है जो उसके पास जाता है मगर क्रोधाग्नि सारे परिवार को जला डालती है।

—संत तिरुवल्लुवर

क्रोधी मानव को एक बार पुनः अपने ऊपर क्रोध आता है, जब उसे समझ आती है।

—पब्लियस साइरस

संतोषी मानव के तीव्र क्रोध से सावधान रहो।

—ड्राइडेन

प्रभु ने जिस को प्रभुता दी है, उसे क्रोध घमंडी बना देता है।

—अज्ञात

किसी के प्रति मन में क्रोध लिए रहने की अपेक्षा उसे तत्क्षण प्रकट कर देना अधिक अच्छा है, जैसे क्षण भर में जल जाना देर तक सुलगने से अधिक अच्छा है।

—वेदव्यास (महाभारत)

जो मनुष्य क्षुद्र हैं, उन्हीं को क्रोध शोभा देता है।

—अज्ञात

क्रोध से धनी मनुष्य घृणा का पात्र होता है और निर्धन तिरस्कार का।

—कहावत

जो मानव क्रोधी पर क्रोध नहीं करता क्षमा करता है, वह अपनी और क्रोध करने वाले की महासंकट से रक्षा करता है, वह दोनों का रोग दूर करने वाला चिकित्सक है।

—वेदव्यास (महाभारत)

जब क्रोध नम्रता का रूप धारण कर लेता है तो अहं भी सिर झुका लेता है।

—अज्ञात

जो मानव मन में उठे हुए क्रोध को दौड़ाते हुए रथ के समान शीघ्र रोक लेता है, उसी को मैं सारथी समझता हूँ, क्रोध के अनुसार चलने वाले को केवल लगाम रखने वाला मात्र कहा जा सकता है।

—गौतम बुद्ध

क्रोध विष है क्योंकि उसकी मादकता में भले-बुरे का ज्ञान नहीं रहता।

—अज्ञात

जिस क्रोधाग्नि को तुम शत्रु के लिए प्रज्ज्वलित करते हो वह बहुधा तुम्हें ही अधिक जलाती है।

—चीनी कहावत

क्रोध कुविचारों की खिड़की है। उसमें द्वेष भी है, दुःख भी है, डर भी है, तिरस्कार भी है, घमण्ड भी है और अविवेकिता भी है।

—अज्ञात

क्षमा

क्षमा तेजस्विनां तेजः क्षमा ब्रह्म तपस्विनाम्।
क्षमा सत्यं सत्यवतां क्षमा यज्ञः क्षमा शमेः॥

(क्षमा तेजस्वी पुरुषों का तेज है। क्षमा तपस्वियों का ब्रह्म है, क्षमा सत्यवादी पुरुषों का सत्य है। क्षमा यज्ञ है और क्षमा मनोविग्रह है।)

—वेदव्यास

खोद-खाद धरती सहै काट-कूट ,बनराय।
कुटिल वचन साधू सहै और से सहा न जाय॥

—महात्मा कबीर

जहाँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप।
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छिमा तहँ आप।।

—महात्मा कबीर

यदि कोई दुर्बल मानव तुम्हारा अपमान करे तो उसे क्षमा कर दो, क्योंकि क्षमा करना ही वीरों का काम है, परन्तु यदि अपमान करने वाला बलवान हो तो उसको अवश्य दण्ड दो।

—गुरु गोबिन्दसिंह

क्षमा से बढ़कर और किसी बात में पाप को पुण्य बनाने की शक्ति नहीं है।

—जयशंकर प्रसाद

संसार में ऐसे अपराध कम हैं जिन्हें हम चाहें और क्षमा न कर सकें।

—शरच्चन्द्र (गृहदाह)

क्षमा दंड से अधिक पुरुषोचित है—क्षमा वीरस्य भूषणम्।

—महात्मा गांधी

छिमा बड़ेन को चाहिए, छोटन को उत्पात।
कहा विष्णु को घट गयो जो भृगु मारी लात।।

—महात्मा कबीर

क्षमा पर मनुष्य का अधिकार है, वह पशु के पास नहीं मिलती। प्रतिहिंसा पाशव धर्म है।

—जयशंकर प्रसाद

अच्चयं देसयन्तीनं, यो चे न पटिग्गण्हति।
कोपंतरो दोसगरु, स वेरं पटिमुञ्चति।।

(जो अपना अपराध स्वीकार करने वालों को क्षमा नहीं करता है, वह अन्दर ही अन्दर क्रोध रखने वाला महाद्वेषी, वैर को और अधिक बाँध लेता है।)

—महात्मा बुद्ध (संयुत्तनिकाय)

क्षमा हृदय का धर्म है।

— अज्ञेय (शेखर : एक जीवनी, भाग-१)

यो हवे बलवा सन्तो, दुब्बलस तितिक्खति।
तमाहु परमं खन्ति, निच्चं खमति दुब्बलो ।।

(जो स्वयं शक्तिशाली होकर भी दुर्बल की बातें सहन करता है, उसी को सर्वश्रेष्ठ क्षमा कहते हैं।)

खन्ति परमं तपो तितिक्खा।
(क्षमा परम तप है।)

—महात्मा बुद्ध (धम्मपद)

अक्कोधेन जिने कोधं, असाधूं साधुना जिने ।
जिने कदरियं दानेन, सच्चेन अलकीवादिनं ।।

(क्षमा से क्रोध को जीतो, भलाई से बुराई को जीतो, दरिद्रता को दान से जीतो और सत्य से असत्यवादी को जीतो।)

—महात्मा बुद्ध (धम्मपद)

खंत्याभिय्यो न विज्जत्ति।
(क्षमा से बढ़कर अन्य कुछ नहीं है।)

—महात्मा बुद्ध (विसुद्धिमग्ग)

शम् त्रे अग्निः सहाद्भिरस्तु।
(तेरे लिए जल (शांति एवं क्षमा) के साथ अग्नि (तेजस्विता) कल्याणकारी हों।)

—अथर्ववेद

अलंकारो हि नारीणाम् क्षमा तु पुरुषस्य वा।
(क्षमा ही स्त्रियों तथा पुरुषों का भूषण है।)

—वाल्मीकि (रामायण, बालकाण्ड)

क्षमा गुणो ह्यशक्तानां, शक्तानां भूषणं क्षमा।
(क्षमा असमर्थ मानवों का गुण है और समर्थों का भूषण है।)

वेदव्यास (महाभारत)

क्षमा यशः क्षमाधर्मः क्षमायां विष्ठित जगत् ।
(क्षमा ही यश है, क्षमा ही धर्म है, क्षमा से ही चराचर जगत् स्थित है।)

—वाल्मीकि (रामायण, बालकांड)

क्षान्त्या शुद्ध्यन्ति विद्वांसः ।
(विद्वान् क्षमा से ही पवित्र शुद्ध होते हैं।)

—मनुस्मृति

क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।
उसको क्या जो दंत हीन, विष रहित, विनीत सरल हो ।।

—रामधारीसिंह 'दिनकर'

न क्रोध उत्पन्न करे कदापि जो
वही क्षमा उत्तम अंग धर्म का।
न मान को दे अभिवृद्धि स्वप्न में
प्रशस्त सो मार्दव धर्म-शील का।

—अनूप (वर्द्धमान)

न श्रेयः सततं तेजो न नित्यं श्रेयसी क्षमा ।
(न तो तेज ही सदा श्रेष्ठ है और न क्षमा ही।)

—वेदव्यास (महाभारत)

क्षमा ब्रह्म क्षमा सत्यं क्षमा भूतं च भाविच ।
क्षमा तपः क्षमा शौचं क्षमयेदं धृतं जगत् ।।
(क्षमा ब्रह्म है, क्षमा सत्य है, क्षमा भूत है, क्षमा भविष्य है, क्षमा तप है और क्षमा पवित्रता है। क्षमा ने ही सम्पूर्ण जगत् को धारण कर रखा है।)

—वेदव्यास (महाभारत)

क्षमा धर्मः क्षमा यज्ञः क्षमा वेदः क्षमा श्रुतम् ।
य एतदेवं जानाति स सर्वं क्षन्तुमर्हति ।।

(क्षमा धर्म है, क्षमा यज्ञ है, क्षमा वेद है और क्षमा शास्त्र है। जो इस तरह जानता है, वह सब कुछ क्षमा करने योग्य हो जाता है।)

—वेदव्यास (महाभारत)

पूर्वोपकारी यस्ते स्यादपराधे गरीयसी ।
उपकारेण तत् तस्य क्षन्तव्यमपराधिनः ।।

(जिसने पूर्व कभी तुम्हारा उपकार किया हो, उससे यदि कोई भारी अपराध हो जाए, तो भी पूर्व के उपकार का स्मरण करके उस अपराधी के अपराध को तुम्हें क्षमा कर देना चाहिए।)

—वेदव्यास (महाभारत)

अजानता भवेत् कश्चिदपराधः कृतो यदि ।।

(अच्छी प्रकार जाँच-पड़ताल करने पर यदि यह सिद्ध हो जाए कि अमुक अपराध अनजान में ही हो गया है, तो उसे क्षमा के ही योग्य बताया गया है।)

—वेदव्यास (महाभारत)

क्षमावतामयं लोकः परश्चैव क्षमावताम् ।
इह सम्मानमृच्छन्ति परत्र च शुभां गतिम् ।।

(क्षमावानों के लिए ही यह लोक है। क्षमावानों के लिए ही परलोक है। क्षमाशील मनुष्य इस विश्व में सम्मान और परलोक में उत्तम गति पाते हैं।)

—वेदव्यास (महाभारत)

यदि न स्युर्मानुषेषु क्षमिणः पृथिवीसमाः ।
न स्यात् संधिर्मनुष्याणां क्रोधमूलो हि विग्रहः ।।

(यदि मनुष्यों में पृथ्वी के समान क्षमाशील पुरुष न हों तो मनुष्यों में कभी संधि हो ही नहीं सकती; क्योंकि झगड़े का मूल तो क्रोध ही है।)

—वेदव्यास (महाभारत)

क्षमा दंड से बड़ी है। दंड मनुष्य देता है और क्षमा देवता से प्राप्त होती है। दंड में उल्लास है पर शांति नहीं और क्षमा में शान्ति भी है और उल्लास भी।

—अज्ञात

क्षत्रिय

क्षत्रिय-क्षत्रिय कहें तें, क्षत्रिय होय न कोय।
सीस चढ़ावै खड्ग पै, क्षत्रिय सोई होय।।

—वियोगी हरि (वीर सतसई)

बारह बरिस लै कूकर जीयें, औ तेरह लै जिये सियार।
बरस अठारह छत्री जीयै, आगे जीवन को धिक्कार।।

—जगनिक (आल्हखंड)

उदनि बांकुड़ा तब उठि बोलो, अनुपी ! सुनो हमारी बात।
बंस हमारे में चलि आई, पहिले चोट करत हम नाहिं।।

—जगनिक (आल्हखंड)

युद्ध सनातन क्षत्रिय धर्मा। समर-पलायन कायर कर्मा।।

—द्वारकाप्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

शूद्र, वैश्य, द्विज-वर्ण-विचारा। होत सतत भूपति दरबारा।
पै निर्णायक क्षत्रिय लागी। नहीं थल अन्य समर-महि त्यागी।।

—द्वारकाप्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

वीरो ! उठो, अब तो कुयश की कालिमा को मेट दो,
निज देश को जीवन सहित तन मन तथा धन भेंट दो।
रघु राम भीष्म तथा युधिष्ठिर सम न हो जो ओज से—
तो वीर विक्रम से बनो, विद्यानुरागी भोज से।।

—मैथिलीशरण गुप्त (भारत भारती)

छत्रिय का यही धर्म है, बलवान से जुट जाय।
दोनों में है यश, मारै चाहै आप ही कुट जाय।।

—भगवानदीन (वीर पंचरत्न)

छत्रनि की यह वृत बनाई। सदा तेग की खाइ कमाई।
गाइ वेद विप्रन प्रतिपाले। घाउएड़ धारिन पै घाले।।

—गोरेलाल (क्षत्रप्रकाश)

क्षुधा

जिस प्रकार शुष्क ईंधन शीघ्रता से जल उठता है, उसी प्रकार क्षुधा से बावला मानव तनिक-तनिक सी बात पर तिनक जाता है।

—अज्ञात

क्षुधा पत्थर की दीवार को भी तोड़ डालती है।

—कहावत

क्षुधा और शीत से पीड़ित मानव स्वयं को शत्रु के हवाले कर देता है।

—कहावत

खर्च

अपार धनाढ्य कुबेर भी यदि आय से अधिक व्यय करे तो कंगाल हो जाता है।

—चाणक्य

खर्च तो गंगाजी का प्रवाह है। जल तो बहता ही है इसलिए खर्च होना भी जरूरी है। हाँ बरसाती नदी की तरह खर्च नहीं होना चाहिए।

—डॉ० रामकुमार वर्मा

रुपए ने कहा मेरी फिक्र न कर पाई की चिन्ता कर।

—चेस्टर फील्ड

छोटे-छोटे खर्चों से सावधान रहो। थोड़ा-थोड़ा जल रिसते रहने से बड़े-बड़े जलयान डूब जाते हैं।

—अज्ञात

धन पैदा करने की अपेक्षा उसके खर्च करने का काम कहीं कठिन है।

—अज्ञात

खतरा

खतरे में हमारी चेतना अन्तर्मुखी हो जाती है।

—प्रेमचन्द (गोदान)

खल (दे० कुटिल, दुष्ट)

कवि कोविद गावहिं अस नीती। खल सन कबहुं न भल नहिं प्रीती॥
उदासीन नित रहिए गोसाईं। खल परिहरिय स्वान की नाईं॥

—तुलसीदास (रामचरित मानस)

क्षुद्र नदी भरि चलि उतराई।
जस थोरे धन खल बौराई॥

—तुलसीदास (रामचरित मानस)

दामिनि दमकि रही घन माहीं।
खल की प्रीति जथा थिर नाहीं॥

—तुलसीदास (रामचरित मानस)

टेढ़ जानि सब वंदइ काहू।
वक्र चन्द्रमा ग्रसइ न राहू॥

—तुलसीदास (रामचरित मानस)

लखि भूषित गज पथ विषे, भूकत स्वान अजान ।
तैसे खल जन जरत हैं, महिमा देखी महान् ।।

—दीनदयाल गिरि (गिरि ग्रंथावली)

खातिरदारी

खातिरदारी जैसी वस्तु में मिठास अवश्य है, पर उसका ढकोसला करने में न तो मिठास है और न स्वाद ही ।

—शरच्चन्द

खादी

स्वराज्य के समान ही खादी भी राष्ट्रीय जीवन के लिए श्वास के जितनी ही आवश्यक है ।

—महात्मा गांधी

खादी पहनने से हम अपने नादान गरीब, नंगे, भूखे भाइयों की झोंपड़ियों में उम्मीदों से भरी हुई झलक चमका सकते हैं ।

—जवाहरलाल नेहरू

खादी पहनने की पवित्रता जिस दिन गंगा-स्नान की भाँति देश के लोगों के हृदय में संस्कार बनकर बैठ जाएगी उसी दिन देश जी सकता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (संस्कार)

हर भारतीय को खादी का शुद्ध उपभोक्ता बनना चाहिए। इसके द्वारा भी हम देश को उन्नत कर सकते हैं ।

—शरण (जिंदगी की तहें)

खद्दर अति को खरखरी, तऊ नेह कौ गेह ।
पर-चरबी चखि चाटि कैं, करी न चिकनी देह।।

—किशोरीदास वाजपेयी (तरंगिणी)

खादी के रेशे रेशे में
अपने भाई का प्यार भरा,
माँ-बहनों का सत्कार भरा
बच्चों का मधुर दुलार भरा।
खादी में कितने ही नंगों
भिखभंगों की है आस छिपी,
कितनों की इसमें भूख छिपी
कितनों की इसमें प्यास छिपी
खादी ही बढ़ चरणों पर पड़
नूपुर-सी लिपट मनायेगी,
खादी ही भारत से रूठी
आजादी को घर लायेगी।

—सोहनलाल द्विवेदी (भैरवी)

खादी न खरीदना करोड़ों 'लोगों' के मुँह का 'कौर' छीन लेने के बराबर है।

—विनोबा भावे

खादी द्वारा कला की—जीवित कला की उपासना होती है।

—विनोबा भावे

खादी को छोड़ने के मानी होंगे भारतीय जनता को बेच देना, भारतवर्ष की आत्मा को बेच देना।

—महात्मा गांधी

खामोशी

खामोश रहो या ऐसी बात कहो जो खामोशी से बेहतर हो।

—पिथागोरस

खामोशी हमारे पवित्रतम् विचारों का देवालय है।

—श्रीमती एस० जे० हेल,

वाचालता महान है किन्तु खामोशी उससे भी महान् है।

—कार्लाईल

वाचालता चाँदी है, खामोशी स्वर्ण है; वाचालता मनुष्यों के लिए उचित है, खामोशी देवताओं के लिए उचित है।

—जर्मन कहावत

खिदमत (दे॰ सेवा)

देश तथा समाज की सच्ची खिदमत वही करता है जो बदले तथा यश की आशा न रखकर निःस्वार्थ भाव से खिदमत करता है।

—महात्मा गांधी

जिस पुरुष ने आत्म-संयम की साधना नहीं की है, वह कदापि सच्ची खिदमत नहीं कर सकता है।

—अज्ञात

खिलाड़ी

खिलाड़ी जीत कर हारने वाले खिलाड़ी की हँसी नहीं उड़ाता, उससे गले मिलता है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

चतुर खिलाड़ी एक बाँस की छड़ी से वह काम कर सकता है जो दूसरे मशीन और बन्दूक से भी नहीं कर सकते।

प्रेमचन्द (कायाकल्प)

पुराना खिलाड़ी मैदान में जाकर जितना नाम करेगा, उतना नया पट्ठा नहीं कर सकता, क्योंकि वहाँ बल का काम नहीं, साहस का काम है।

—प्रेमचन्द (नियंत्रण)

खुदा-खुदी

ख़ुदा से डरने वाले को और किसी का क्या डर है ?

—विनोबा भावे

जो स्वयं का प्रशंसक है, गुणों का प्रशंसक नहीं, वही मानस स्वयं को औरों से उच्च समझता है।

—प्लूटार्क

सारा दरिया स्याही बन जाय और सारे दरख्त कलम बन जाएँ तो भी खुदा का पूरा बयान नहीं हो सकता।

—कुरान

खुदी से इन्सान फूल सकता है लेकिन खुद अपने को सहारा नहीं दे सकता।

—रस्किन

जो ख़ुदा को जानता है, वह खुद अपनी प्रशंसा नहीं करता।

—अली

खुद को जानना खुदा को जानना है। —अज्ञात

खुशामद-खुशामदी

यदि राजा दिन को निशा बतलावे तो यही कहना चाहिए कि वह चन्द्रमा और रोहणी हैं।

—सादी

रहिमन जो रहिबो चहै कहैं वाहि के दांव।
जो बासर को निशि कहै तो कचयथी दिखाव ।।

—रहीम

खुशामदी इन्सान इसलिए आपकी खुशामद करता है कि वह आपको अयोग्य समझता है, किन्तु आप उसके मुख से अपनी बढ़ाई सुन कर फूले नहीं समाते।

—टालस्टाय

माँचर भूँठ को हाँ कहनी औ सदा कहनी मुँह सों मिली बातें।
दुःखरु सुख में संग रहै नित राखनो राजी सु अपनी घातें।।
राय गुपाल जू देय कछू जब डोलत पाछे लग्यो दिन रातें।
याहीं ते या जग मांझ बुरी रुजिगार खुशामदि को यह बातैं।।

—गुपालराय (दम्पति वाक्यविलास)

खुशी (दे० हर्ष, आनन्द)

खुशी का रहस्य त्याग है।

—एन्ड्रयू कारनेगी

खुशी तन्दुरुस्ती है, इसके विपरीत उदासी रोग है।

—हेलीबर्टन

खुशी न हमारे अन्दर है और न बाहर है अपितु यह हमारा ईश्वर के साथ ऐक्य है।

—पास्कल

अत्यंत प्रसन्नचित्त मानव वह है जो अपने जीवन के आदि और अन्त से सम्बन्ध स्थापित करना जानता है।

—गेटे

खून-खूनी

खून सिर पर चढ़ कर बोलता है!

—कहावत

एक खून नीच बनाता है तो लाखों एक वीर! संख्या पाप को पवित्र बना देती है।

—पोरटियस

मानव के खून बहानेकी उत्कट उत्तेजना को हमारे देश के खूनी किसी भी दशा में अन्दर दबा कर नहीं रख सकते।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (जासूस)

वह खून कहो किस मतलब का, जिसमें उबाल का नाम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का, आ सके देश के काम नहीं॥

—गोपालप्रसाद व्यास (कदम बढ़ाए जा)

खूबसूरती (दे॰ सुन्दरता)

खूबसूरती ऐसी जादूगरनी है कि उसके जादू से धर्म-ईमान गल कर खून हो जाते हैं।

— शेक्सपियर

खूबसूरती बहुधा शराब से भी बुरी है। वह खुद को और देखने वाले दोनों को मदमत्त कर देती है।

—जमीरन

खूबसूरत वस्तु में सभी इन्सानों की दृष्टि को आकर्षित करने की इतनी प्रबल शक्ति है कि कोई भी उससे प्रसन्न हुए बिना नहीं रह सकता।

—ग्लेडन

खोटा

रहिमन खोटी आदि को, सो परिनाम लखाय।
ज्यों दीपक तम को भखै, कज्जल वमन सराय॥

—रहीम

यदि आप खोटे इन्सान को देखते और उसकी बातों को सुनते हैं तो यहीं से खोटेपन का आरम्भ हो गया समझिए।

—कन्फ्यूशस

ख्याति (दे॰ प्रसिद्धि)

ख्याति-प्रेम वह प्यास है जो कभी नहीं बुझती। वह अगस्त ऋषि की भाँति सागर को पीकर भी शांत नहीं होती।

—प्रेमचन्द

ख्याति की इच्छा वह वस्त्र है जिसे ज्ञानी मनुष्य भी अन्त में उतारते हैं।

—कहावत

धन और स्त्री का छोड़ना सहज है, परन्तु ख्याति का लोभ छोड़ना बहुत कठिन है।

—हनुमानप्रसाद पोद्दार

ख्याति सिर्फ जनता की सांस है और वह बहुधा अस्वास्थ्यजनक है।

—रूसो

ख्याति सरिता की तरह अपने उद्गम स्थान पर अति संकीर्ण और बहुत दूर अति फैलाव में हो जाती है।

—डेवीनेण्ट

अपनी ख्याति और स्मृति के लिए मैं दूसरों की दया एवं कृपा पर निर्भर रहता हूँ।

—बेकन

लोकमान्य और विचारशील मानवों द्वारा की गई बड़ाई सुगन्धित तेल के समान सर्वत्र शीघ्र फैल जाती है।

—बेकन

ख्याति सरिता के प्रवाह के समान है। जैसे सरिता के प्रवाह में हल्की तथा फूली हुई वस्तु ऊपर तैरा करती है और जड़ तथा गरुई नीचे डूब जाती है वैसे ही प्रशंसा रूपी प्रवाह में उत्तमोत्तम गुण डूबे रहते हैं, केवल छोटे-छोटे गुण ऊपर दिखलाई देते हैं।

—बेकन

किसी पूर्वतन ख्याति का उत्तराधिकार ग्रहण करना एक संकट मोल लेना है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (आँख की किरकिरी)

मानव की बुराइयाँ दीर्घजीवी होती हैं, उसकी अच्छाइयाँ अल्पायु होती हैं।

—शेक्सपियर

ख्याति एक आतशी शीशा है।

—कहावत

ख्वाहिश (दे० इच्छा)

ख्वाहिशों का देरी द्वारा पालन-पोषण होता है।

—कहावत

गंगाजी

अपहृत्य तमस्तीव्रं यथा भात्युदये रविः।
तथापहृत्य पाप्मानं भाति गंगाजलोक्षितः॥

(जैसे सूर्य उदयकाल में घने अंधकार को दूर करके प्रकाशित होता है, वैसे ही गंगाजी में स्नान करने वाला मानव अपने पापों को नष्ट करके सुशोभित होता है।)

—वेदव्यास (महाभारत)

भवन्ति निर्विषाः सर्पा तथा तार्क्ष्यस्य दर्शनात्।
गंगायाः दर्शनात् तद्वत् सर्वपापैः प्रमुच्यते॥

(जैसे गरुड़ को देखते ही सारे सर्पों के विष झड़ जाते हैं, वैसे ही गंगाजी के दर्शन मात्र से मानव सब पापों से छुटकारा पा जाता है।

—वेदव्यास (महाभारत)

गंग सकल मुद मंगलमूला।
सब सुख करनि हरनि सब शूला॥

—तुलसीदास (मानस)

विसोमा इव शर्वर्यो विपुष्पास्तरवो यथा।
तद्वद् देशा दिशश्चैव हीना गंगाजलैः शिवैः॥

(जैसे बिना चाँदनी के निशा और बिना पुष्पों के वृक्ष शोभा नहीं पाते, वैसे ही गंगाजी के कल्याणमय जल से वंचित राष्ट्र और दिशाएँ भी शोभा एवं सौभाग्य से हीन हैं।

गर्व (दे० अभिमान, अहंकार, दर्प, घमंड)

कबिरा गरब न कीजिए कबहुँ न हँसिए कोय।
अबहुँ नाव समुद्र में का जाने का होय॥

—महात्मा कबीर

धन अरू यौवन को गरब कवहूँ करिए नांहि।
तेखत ही मिट जात है, ज्यों बादर की छांहि॥

—अज्ञात

'कबीर' कहा गरबियौ, चाम लपेटे हड्ड।
हैंबर ऊपर छत्र सिर, ते भी देना खड्ड॥

—महात्मा कबीर (कबीर ग्रन्थावली)

कहा नर गरबस थोरी बात
मन दस नाज टका चार गाँठी, ऐंड़ी टेढ़ो जात॥
बहुत प्रताप गाँव से पाये, दुइये टका बरात।
दिवस चारि कः करो साहिबी, जैसे बन हर पात॥
ना काऊ लै आयो यह धन, ना कोऊ लै जात।
रावन हूँ से अधिक छत्रपति, छिन में गये विलात॥

—महात्मा कबीर (कबीर ग्रन्थावली)

पहले गर्व चलता है उसके बाद कलंक आता है।

—कहावत

जिसने गर्व किया, उसका अवश्य पतन हुआ।

—महर्षि दयानन्द

गर्व संतोष का घोर शत्रु है।

—कहावत

गर्व समृद्धि के साथ कलेवा करता है, निर्धन के साथ मध्याह्न का भोजन और बदनामी के साथ निशा का भोजन करता है।

—फ्रैंकलिन

गरीब-गरीबी (दे० निर्धन, निर्धनता)

भगवान गरीब को गरीब रख कर आजमाता है कि वह हिम्मत रखता है या नहीं।

—विनोबा भावे

उस इंसान से ज्यादा गरीब कोई नहीं है, जिसके पास केवल पैसा है।

—एडविन पग

गरीब होना और गरीब मालूम पड़ना यह कभी उन्नति न करने का एक निश्चित मार्ग है।

—गोल्ड स्मिथ

गरीब वह है जिसका खर्च आमदनी से ज्यादा है।

—ब्रूएयर

वह गरीब नहीं जिसके पास कम धन है वरन गरीब वह है जिसकी अभिलाषाएँ बढ़ी हुई हैं।

—डेनियल

गरीबों के अलावा कुछ ही ऐसे इंसान हैं, जो गरीबों के विषय में सोचते हैं।

—एल० ई० लण्डन

मनुष्य को अपने जीवन के बाहर की कल्पना करना मुश्किल होता है। इसलिए कहा गया है कि गरीब की सेवा करने के लिए गरीब बनना चाहिए।

—विनोबा भावे

गरीवी अनोखे इंसानों से गहरा सम्बन्ध करा देती है।

—कहावत

गरीबी सब कलाओं के आविष्कार का कारण है।

—कहावत

जो गरीबों पर दया करता है, वह अपने कृत्यों से ईश को ऋणी बनाता है।

—बाइबिल

सभी महान् धार्मिक नेताओं ने गरीबी को जान-बूझकर अपने भाग्य के समान अपनाया। मुहम्मद साहब ने कहा है कि गरीबी मेरा अभिमान है।

—महात्मा गांधी

किसी तरह की भी गरीबी हमारा भगवान् से उचित सम्बन्ध जोड़ देती है जबकि हर तरह की अमीरी, मन अथवा धन की, हमारा उससे विच्छेद करा देती है।

—फ्रैंक क्रासले

गरीब वे इंसान हैं जो अपने को गरीब मानते हैं, गरीबी गरीब समझने में ही है।

—एमर्सन

अगर गरीबी अपराधों की जन्मदायिनी है तो बुद्धि उनका पिता है।

—ब्रूएयर

गरीबी विनम्रता की परीक्षा और मित्रता की कसौटी है।

—हैजलिट

गरीबी खुद अपमानजनक नहीं है, सिर्फ उस गरीबी के अलावा जो आलस्य, व्यसन, फिज़ूलखर्ची और मूर्खता के कारण हुई हो।

—प्लूटार्क

गलती

अपनी ग़लती स्वीकार कर लेने में लज्जा की कोई बात नहीं है। इससे, दूसरे शब्दों में, यही प्रमाणित होता है कि बीते हुए कल की अपेक्षा आज आप अधिक बुद्धिमान हैं।

—अलेक्जेण्डर पोप

गलतियों की सबसे बड़ी औषधि है उनको विस्मृत कर देना।

—साइरस

गलती तो हर मनुष्य कर सकता है, किन्तु उस पर दृढ़ केवल मूर्ख ही होते हैं।

—सिसरो

बहुत-सी तथा बड़ी गलतियाँ किए बिना कोई आदमी बड़ा और महान् नहीं बनता।

—ग्लेडस्टन

विवेकशील पुरुष दूसरे की गलतियों से अपनी गलती सुधारते हैं।

—प्यूब्लियस साइरस

सम्मति की गलती वहाँ सराहनीय है जहाँ बुद्धि उसके विरोध के लिए स्वतंत्र है।

—जेफरसन

गलती वह ताकत है जो इंसानों को ठुकरा कर आपस में मिलाती है, सत्य सिर्फ सत्य कर्मों से ही इंसानों में पहुँचाया जा सकता है।

—टालस्टाय

ग़लती हमारे ज्ञान की नहीं बल्कि निर्णय की त्रुटि है जो झूठ के लिए अपनी मंजूरी दे देता है।

—लॉक

गलती ज्ञान की शिक्षा है।

—अज्ञात

गलतियाँ करके, उनको मंजूर करके और उन्हें सुधार कर ही मैं आगे बढ़ सकता हूँ। पता नहीं क्यों, किसी के वरजने से या किसी की चेतावनी से मैं उन्नति कर ही नहीं सकता। ठोकर लगे और दर्द उठे तभी मैं सीख पाता हूँ।

—महात्मा गांधी

हम बहुधा दूसरे के गुणों की अपेक्षा उसकी गलतियों से अधिक सीख लेते हैं।

—लांगफेलो

हमारा गौरव कभी न गिरने में नहीं है अपितु हर बार उठने में है जब कभी हम गिरें।

—कन्फ्यूशस

श्रेष्ठ ग्रंथ आत्मा का मूल्यवान् जीवन रुधिर है जो ध्येय स्वरूप आने वाली पीढ़ियों के लिए सुरक्षित और संचित रखा गया है।

—मिल्टन

ग्रन्थ (दे० पुस्तक)

बहते हुए झरनों में प्रासादिक ग्रंथ संचित हैं, पाषाणों में दर्शन छिपे हैं।

—शेक्सपियर

ग्रंथ समय के महासागर में प्रकाश गृह के समान खड़े हुए हैं।

—ई० पी० विपिल

ग्रंथ रहित कक्ष आत्मा रहित देह के सदृश है।

—सिसरो

ग्रंथ ऐसे अध्यापक हैं जो बिना बेंत मारे, बिना कटु शब्द एवं क्रोध के, बिना वस्त्र और धन के हमें शिक्षा प्रदान करते हैं।

—रिचार्ड डी० बरी

ग्रंथों में आत्मा है। सद्ग्रंथों का कभी नाश नहीं होता।

—लिटन

बिना ग्रंथ के भगवान मौन हैं, न्याय निद्रित है, प्राकृतिक विज्ञान स्तब्ध है, दर्शन लंगड़ा है, शब्द गूंगे हैं और सभी वस्तुएँ पूर्ण अंधकार में हैं।

—बार्थोलिन

कुछ ग्रंथ चखी जाती हैं, कुछ निगली जाती हैं और कुछ चबा-चबाकर खाई-पकाई जाती हैं।

—बेकन

गाँठ

रहिमन खोजो ऊख में, जहाँ रसन की खानि।
जहाँ गाँठ तँह रस नहीं, यही प्रीति की हानि।।

—रहीम

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।
टूटे से फिरि ना मिलै, मिलै गाँठि परिजाय।।

—रहीम

जहाँ गाँठि तहँ रस नहीं, यह जानत सब कोय।
मड़ये तर की गाँठि में, गाँठि-गाँठि रस होय।।

—रहीम

गाना

जब देह का रोम-रोम रोता हो, हृदय के हरेक तार में वेदना की लहर भर गई हो, मन को हर तरह की तपन और जलन की झुलस सता रही हो—गाने की एक स्वर्गीय तान में अपना समूचा दुःख डूबो देना कितना सरल और सुगम है।

—अज्ञात

गान स्मृति में सभी नीति वचनों की अपेक्षा अधिक समय तक जीवित रहेगा।

—एच० गिल्स

गाली

मैं गाली खा लेना अच्छा समझता हूँ अपेक्षा इसके कि कोई मुझे भुला दे।

—डॉ० जॉनसन

गाय (दे० गौ)

त्वं माता सर्व देवानां त्वं च यज्ञस्य कारणम्।
त्वं तीर्थं सर्व तीर्थानाम् नमस्तेऽस्तु सदानघे॥

(हे पाप रहिते! तुम समस्त देवों की माता हो। तुम यज्ञ के कारण रूपा हो. तुम समस्त तीर्थों की महातीर्थ हो; तुमको सदैव नमस्कार है।)

—स्कन्दब्राह्मधर्मारण्य

मेरा सारा प्रयत्न गो-वध रोकने के लिए है। जो गाय को बचाने के लिए प्राण होम देने को तैयार नहीं, वह हिन्दू नहीं।

—महात्मा गांधी

मेरे विचार के अनुसार गौ-रक्षा का सवाल स्वराज्य के प्रश्न से छोटा नहीं है। कई बातों में मैं इसे स्वराज्य के सवाल से भी बड़ा मानता हूँ। मेरे नजदीक गोवध और मनुष्य वध एक ही चीज है।

—महात्मा गांधी

मधुमान् नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः।
माध्वीर्गावो भवन्तु नः।

(हमारे लिए सारी वनस्पतियाँ मधुर हों। सूर्य मधुर हो और सभी गौएँ भी मधुर हों।)

—ऋग्वेद

कृष्णा सती रुशताधासिनैषा,
जामर्येण पयसा पीपाय।

(काली गौ पुष्टिकारक एवं प्राणदाता अमृतस्वरूप सफेद दूध के द्वारा मनुष्यों का पालन करती है।)

—ऋग्वेद

गावो भगो, गाव इन्द्रो मे अच्छान्।

(गाय ही मेरा धन है, इन्द्र मुझे गाय प्रदान करें।)

—ऋग्वेद

इमा या गावः स जनास इन्द्र,
इच्छामीद्धृदा मनसा चिदिन्द्रम्।

(हे मानवो ! यह गाय ही इन्द्र है। मैं श्रद्धा भरे मन से इस इन्द्र की पूजा करना चाहता हूँ।)

—ऋग्वेद

यूयं गावो मेदयथा कृशं चिद्-
अश्रीरं चित् कृणुथा सुप्रतीकम्।
भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो,
बृहद् वो वय उच्यते सभासु॥

(हे गायो ! तुम हमें आप्यायित करो। कृश तथा श्रीहीन हमको सुन्दर बनाओ। हे शुभ ध्वनि वाली गायो ! हमारे घरों को शुभमय बनाओ। तुम्हारा दूध आदि मधुरस जनसभाओं में सबको बाँटा जाता है।)

—ऋग्वेद

स्वदन्ति गावः पयोभिः।

(गाय अपने दूध से भोजन को मधुर बनाती है।

—ऋग्वेद

गां मा हिंसीरदितिं विराजम्।

(दूध दान आदि के द्वारा शोभायमान अदिति गौ को मत मारो।)

—यजुर्वेद

य शतौदनां पचति कामप्रेण स कल्पते ।

(जो सैंकड़ों मनुष्यों को अन्न-भोजन देनेवाली गौ को पालता है, वह अपने संकल्पों को पूरा करता है।)

—अथर्ववेद

अमृतं वै गवां क्षीरमित्याह त्रिदशाधिपः ।

(देवराज इन्द्र ने कहा है कि गौओं का दूध अमृत है।)

—वेदव्यास (महाभारत)

अवनि-असुर अति प्रबल मुनीजन-कर्म छुड़ाए ।
गउ सन्तन के हेत, देह धरि व्रज में आए ।।

—कुम्भनदास

गुन गायो कहि मातु नित, निरखि नवायो माथ ।
बैतरनी - तरनी वहै, सौंपि कसाइन - हाथ ।।

—रामेश्वर करुण (करुण सतसई)

गैया माता तुम का सुमरों कीरत सबते वड़ी तुम्हारि ।
करो पालना तुम लरिकन कै पुरिखन बैतरनि देउ तारि ।।
तुमरे दूध दही की महिमा जानैं देव पितर सब कोय ।
को अस तुम बिन दूसर जिहि का गोबर लगे पवित्तर होय ।।
जिनके लरिका खेती करिकै पालैं मनइन के परिवार ।
ऐसी गाइन की रच्छा मां जो कुछ जतन करौ सौ सौ वार ।।
घास के बदले दूध पियावै मरि के देंय हाड़ और चाम ।
धनि यह तन मन धन जो आवैं ऐसी जगदम्भा के काम ।।

—प्रतापनारायण मिश्र

फरमाया रसूल अल्लाह ने कि गाय का दूध शिफा है, घी दवा और उसका माँस नितान्त मर्ज़ है।

—हजरत आयशा (हजरत मोहम्मद की पत्नी)

गाय के माँस में बीमारी है, उसके दूध में दुआ और घी में सफ़ा है।

—अल्लामा जलालुद्दीन सियुती (अलरहमत)

भारत अवनी अन्न बहुत-सा है उपजाती,
इसीलिए है कनक प्रसविनी कही जाती।
इसी अन्न से तीस कोटि मानव पलते हैं,
तथा तम-भरे सहन मध्य दीपक जलते हैं।
गो-सुत-गात-विभूति से अन्न-राशि उद्भूत,
भारतीय गौरव सकल गो-गौरव-संभूत।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (मर्म-स्पर्श)

गोभिस्तुल्यं न पश्यामि धनं किञ्चिदिहाच्युत।
कीर्तनं श्रवणं दानं दर्शनं चापि पार्थिव।
गवां प्रशस्यते वीर सर्व-पाप-हरं शिवं॥

(मैं इस ब्रह्माण्ड में गौवों के समान दूसरा कोई धन नहीं समझता। गौवों के नाम और गुणों का कीर्तन-श्रवण, गौवों का दान तथा उनका दर्शन—इनकी बड़ी प्रशंसा की गई है। यह समस्त कार्य सम्पूर्ण पापों को दूर करके परम कल्याण को प्रदान करनेवाले हैं।)

—वेदव्यास (महाभारत)

गाय को मारनेवाला, फलदार वृक्ष को काटनेवाला और मदिरापान करनेवाला कभी भी नहीं बख्शा जायेगा।

—मुल्ला मोहम्मद बाकर हुसैनी (महारुल अनवर)

गायत्री

सव्याहृतिकां सप्रणवां गायत्रीं शिरसा सह।
ये जपन्ति सदा तेषां न भयं विद्यते क्वचित्॥

(जो सदैव गायत्री का जाप व्याहृतियों और ओंकार सहित करते हैं, उन्हें कहीं भी कोई भय नहीं सताता।)

—शंखस्मृति

गायत्री छन्दसां मातेति।
(गायत्री समस्त वेदों की माता है।)

—नारायण उपनिषद्

गायत्री वेद-जननी गायत्री पाप नाशिनी।
गायत्र्यास्तु पर नास्ति दिविचेह च पावनम्।।
(गायत्री वेदों की जननी है। गायत्री पापों को नाश करनेवाली है। गायत्री से बड़ा और कोई पवित्र मंत्र स्वर्ग तथा मही पर नहीं है।)

—वशिष्ठ

गायत्री मन्त्र द्वारा सारे विश्व को उत्पन्न करने वाले परमात्मा का जो उत्तम तेज है उसका ध्यान करने से बुद्धि की मलिनता दूर हो जाती है और धर्माचरण में श्रद्धा और योग्यता उत्पन्न होती है।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

गायत्र्यास्तु परं नास्ति शोधनं पाप कर्मणाम्।
महाव्याहृति संयुक्तां प्रणवेन च संचपेत्।।
(गायत्री से बढ़कर पाप कर्मों का शोधक अन्य कुछ भी नहीं है। ओंकार सहित तीन महाव्याहृतियों से युक्त गायत्री मन्त्र का जाप करना चाहिए।)

—संवर्तस्मृति

गीत

भावना से स्नेह, स्नेह से उल्लास और उल्लास से गीतों की सृष्टि होती है।

—रस्किन

हमारे सब से मधुर गीत वही होते हैं, जिनमें हमारी गहन संवेदना अभिव्यंजित होती है।

—शेली

सुख-दुःख को आवेशमयी अवस्था-विशेष का गिने-चुने शब्दों में स्वर साधना के उपयुक्त चित्रण कर देना ही गीत है।

—महादेवी

गीता

गीता विश्वधर्म की पुस्तक है।...वह हमारे लिए सद्गुरु रूप है, माता रूप है।

—महात्मा गांधी

गीता जवानी जमा खर्च का शास्त्र नहीं; किन्तु आचरण शास्त्र है।

—विनोबा भावे

गीता हमारे धर्म ग्रन्थों में एक अत्यन्त तेजस्वी और निर्मल हीरा है।

—लोकमान्य तिलक

गीता वह तेलजन्य दीपक है जो अनन्त काल तक हमारे ज्ञान-मंदिर में प्रकाश करता रहेगा।

—महर्षि द्विजेन्द्रनाथ ठाकुर

गीता को धर्म का सर्वोत्तम ग्रन्थ मानने का यही कारण है कि उसमें ज्ञान, कर्म और भक्ति—तीनों योगों की न्याययुक्त व्याख्या है; अन्य किसी भी ग्रन्थ से इसका सामंजस्य नहीं है।

—बंकिमचन्द्र

गीता विवेक रूपी वृक्षों का एक अपूर्व बगीचा है। यह सब सुखों की नींव है। सिद्धान्त रत्नों का भण्डार है। नवरस रूपी अमृत से भरा हुआ सागर है। खुला हुआ परम धाम है।

—संत ज्ञानेश्वर

गुण-गुणी

गुणी को अपना गुण दिखाते शर्म नहीं आती।

गुणी गुणियों ही की निगाह में सम्मान पाने का इच्छुक होता है। जनता की उसे परवाह नहीं होती।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

प्रतिभावान मानव वह कार्य करते हैं जिसे किए बिना वे रह नहीं सकते, गुणवान मानव वह कार्य करते हैं जो वे कर सकते हैं।

—ओवेन मेरीडॅत

बौना छोटा ही रहेगा चाहे वह पर्वत पर खड़ा हो, देव देव ही रहेगा चाहे वह कुएँ में ही क्यों न खडा हो?

—सेनेका

स्त्री हो या पुरुष, गुण और स्वभाव ही उसमें मुख्य वस्तु है। इसके सिवा और सभी बातें गौण हैं।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

गुणियों की जाति-पाँत नहीं देखी जाती।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

गुन तो आदमी उसमें देखता है; जिसके साथ जनम भर निर्वाह करना है।

—प्रेमचन्द (गोदान)

स्पष्टवादिता मनुष्य का एक उच्च गुण है।

—प्रेमचन्द (ज्वालामुखी)

गुण मानव के वश में है; प्रतिभा के वश में मानव स्वयं होता है।

—लावेल

गुन के ग्राहक सहस नर, बिन गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला, शब्द सुनै सब कोय॥

—गिरिधर कविराय

जहाँ रहै गुनवंत नर ताकी शोभा होत।
जहाँ धरै दीपक तहाँ निहचै करै उदोत॥

—प्रभाकर

समकालीन मानव गुण की अपेक्षा मानव की प्रशंसा करते हैं, आने वाली पीढ़ियाँ मानव की अपेक्षा उसके गुणों का सम्मान करेंगो।

—कोल्टन

बड़े बड़ाई न करैं, बड़े न बोलैं बोल।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो मोल॥

—रहीम

कहा भयो जो सिर धयो, कान्ह तुम्हें करि भाव।
मोर पंखा बिन और तुम, उहाँ न पैहो नांव॥

—रत्ननिधि (सतसई सप्तक)

रूप हो या न हो इससे क्या बिगड़ता है,
किन्तु गुण तो रात में भी चमक आते हैं।
मेघ की काली घटा में दामिनी के स्वर,
नींद में भी कहानी अपनी सुनाते हैं॥

—उदयशंकर भट्ट (कणिका)

द्विज-सा देव-प्रिय चाण्डाल, यदि वह है स्ववृत्ति व्रत पाल।
नहीं वित्त विद्या अनिवार्य, वृत्त बनात है बस आर्य॥
दीपक से भी कज्जल जात, और पंक से भी जल-जात।
एक डाल में काँटे फूल, जाति नहीं, गुण मंगल मूल॥

—मैथिलीशरण गुप्त (हिन्दू)

ऊँचे बैठे न लहै, गुण बिन बड़पन कोइ।
बैठो देवल शिखर पर, वायस गरुड़ न होई॥

—वृन्द (वृन्द सतसई)

दया, दाक्षिण्य, सेवा, प्यार श्रद्धा,
हमारी वंचना के नाम हैं ये!
हृदय मस्तिष्क, भुज, श्रम, शीष, जिह्वा
क्षणों की रोटियों के दाम हैं ये।

—माखनलाल चतुर्वेदी (वेणु लो गूँजे धरा)

वाह्मन आइ सुवा सौं पूछा। दहूं गुनवंद कि निरगुन छूछा।
कहू परवत्ते ! गुन तोहिं पाहां। गुनन छिपाइय हिरदय माहां॥

—मलिक मुहम्मद जायसी (जायसी ग्रन्थावली)

तउ लूं 'राज' न होई है, गुण-माणिक की ओप।
खल जीहा खरसाण परि, चढ़ै न जऊँ लूं चोप॥

—लक्ष्मीवल्लभ (दूहा बावनी)

घड़ियौ सोव्रन घाट, जड़ियौ घर जवाहर सूं।
विण गुण को हर वाट, नीर न निकसै नाथिया।

—नाथूराम (सिछ्यासार)

स्वीय कर्मों ही के अनुसार,
एक गुण फलता विविध प्रकार;
कहीं राखी बनता सुकुमार,
कहीं बेड़ी का भार।

—सुमित्रानंदन पंत (आधुनिक कवि)

जो औरों के हृदय जीत ले,
उसकी हार नहीं होती है।

—रघुवीरशरण मित्र (जननायक)

क्या मैं हूँ यह सुमन नहीं बतलाता फिरता,
उसकी सुन्दर सुरभि उसे है मान दिलाती।
ऐसे ही है मनुज गुणों से पूजा जाता,
लम्बी-लम्बी नही है बात बनाती॥

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (मर्मस्पर्श)

काँटा अपने आँगन का भी अपनी आँखों में गड़ता है,
लेकिन फूल कहीं का भी हो, मन में बस जाया करता है।
महक उठा करता है जीवन में परदेसी होकर भी कोई,
कोई अपना होकर भी तो बहुत पराया-सा लगता है॥

कूपहि आदर उचित है, नहि गुनिन को हेय ।
अंतर गुन को ग्रहन करि, फिरि-फिरि जीवन देय ।।

—दीनदयाल गिरि (गिरि ग्रन्थावली)

गुनि लखि सब कोइ आदरै गादी [illegible]।
कौन पिटाई डुगडुगी, रेल चढ़हु है भाय ।।

—सुधाकर द्विवेदी

गुणाः सर्वत्रपूज्यन्ते न महत्योपि संपदः ।
पूर्णेन्दुः किम् तथा वंद्यो निष्कलंको यथा कृशः ।।

(गुणों की पूजा हर जगह होती है, बड़ी सम्पत्ति की नहीं, जिस तरह पूर्ण चन्द्रमा वैसा बंदनीय नहीं है जैसा निर्दोष द्वितीया का क्षीण चन्द्रमा ।)

—चाणक्य

गुणाः सर्वत्र पूजयन्ते पितृवंशो निरर्थकः ।
वासुदेवं नमस्यन्ति वसुदेवं न ते जनाः ।।

(गुणों की हर जगह पूजा होती है, गुणी के वंश की नहीं । लोग वासुदेव (कृष्ण) को ही नमस्कार करते हैं, उनके पिता वसुदेव को नहीं ।)

—चाणक्य

विवेकिन मनुप्राप्ता गुणायान्ति मनोज्ञताम् ।
सुतरां रत्नमाभाति चामीकर नियोजितम् ।।

(विवेकी को पाकर गुण सौन्दर्य को प्राप्त होते हैं, स्वर्ण जड़ित रत्न अत्यंत शोभित होता है ।)

—चाणक्य

गुणैरुत्तमतां यान्ति नोच्चै रासनेसं स्थितैः ।
प्रसाद शिखर स्थोपि काकः किम् गरुड़ायते ।।

(गुणों से ही मानव महान् होता है, उच्च आसन पर बैठने से नहीं । प्रासाद के उच्च शिखर पर बैठने से भी कौवा गरुड़ नहीं हो सकता ।)

—चाणक्य

परस्तुतगुणो यस्तु निर्गुणों ऽपि गुणी भवेत् ।
इन्द्रोऽपि लघुताम् याति स्वयं प्रख्यापितैर्गुणैः ।।

(जिस गुण का दूसरे लोग वर्णन करते हैं उससे निर्गुण भी गुणवान् होता है, इन्द्र भी अपने गुणों की प्रशंसा करने से लघुता को प्राप्त होता है।)

पदं हि सर्वत्र गुणैर्निधीयते ।
(गुण सब स्थानों पर अपना सम्मान करा लेता है।)

—कालिदास (रघुवंश)

एको हि दोषो गुणसंनिपाते निमज्जतीन्दो : किरणैष्विवाङ्क ।

(जहाँ असंख्य गुण हों वहाँ यदि एकाध अवगुण भी आ जाए तो उसका वैसे ही पता नहीं चल पाता जैसे चन्द्र की किरणों में उसका कलंक।)

—कालिदास (कुमारसम्भव)

यत्रास्तिलक्ष्मीर्विनयो न तत्र ह्यभ्यागतो यत्र न तत्र लक्ष्मीः ।
उभौ च तौ यत्र न तत्र विद्या नैकत्र सर्वो गुणसंनिपातः ।।

(जहाँ लक्ष्मी का वास है वहाँ नम्रता नहीं है और जहाँ अतिथि समागम है वहाँ लक्ष्मी नहीं रहती है। और जहाँ दोनों हैं, वहाँ विद्या का ही अभाव रहता है, अतः यह निश्चित है कि एक जगह सब गुण समूह नहीं होता।)

—व्यास

गुप्त भेद

रहिमन निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बाँटि न लैहैं कोय ।।

—रहीम

अर्थनाशं मनस्तापं गृहेदुश्चरितानि च ।
नीच वाक्य चापमानं मतिमात्र प्रकाशयेत् ॥

(धन का नाश, मन का ताप, घर का चरित्र, नीच का वचन और अपमान इनको बुद्धिमान प्रकाशित न करें।)

—चाणक्य

किसी मित्र को अपना ऐसा भेद न बताओ जिसके प्रकट हो जाने पर अपशय मिले ।

—थेल्स

वह मानव कम विश्वसनीय है जो स्वयं अपना गुप्त परामर्शदाता नहीं है ।

—फोर्ड

जो इंसान अपना गुप्त-भेद सेवकों पर प्रकट करता है, वह उनको अपना स्वामी बना लेता है ।

—ड्राईडन

दीवार के भी कान होते हैं, इसका ध्यान रखना चाहिए ।

—शेख सादी

हम कैसे यकीन करें कि दूसरे हमारे भेद को गुप्त रखेंगे जबकि हम स्वयं ही उन्हें गुप्त नहीं रह सकते ।

—ला रोशोको

गुनाह (द्रे० पाप)

अगर गुनाह से किसी की जान बचती हो तो ऐसा करना सवाब है ।

—प्रेमचन्द

गुनाह छिपा नहीं रहता । वह मनुष्य के मुख पर लिखा रहता है ।

—महात्मा गांधी

गुरु, गुरु-भक्ति

कबिरा ते नर अन्ध हैं गुरु को कहते और।
हरि रूठै गुरु ठौर है गुरु रूठै नहिं ठौर।।

—महात्मा कबीर

यह तन विष की बेलरी गुरु अमृत की खान।
सीस दिए जो गुरु मिले तो भी सस्ता जान।।

—महात्मा कबीर

बिन गुरु होय न ज्ञान।

—तुलसीदास

पतिरेव गुरुस्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरुः।
गुरुरग्निर्द्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः।।

—चाणक्य

जो मनुष्य परमात्मा का ज्ञान प्राप्त कर लेता है, वह परमात्मा का ही स्वरूप बन जाता है और इस तरह सिद्ध है कि गुरु के आसन पर मनुष्य नहीं किन्तु परमात्मा स्वयं आसीन रहते हैं।

—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

जो स्वयं प्रकाश फैलाने वाला है यदि वही अन्धेरे में ठोकर खाकर गिरे तो वह दूसरों के लिए उजाला क्या करेगा?

—हरिऔध

एक मात्र ईश्वर ही विश्व का पथ-प्रदर्शक और गुरु है।

—रामकृष्ण परमहंस

बिन गुरु माल होऊँ कत चेला, बिन गुरु दाया चलै अकेला,
गुरु बिन पंथ न पावै कोई, केतिको ज्ञानी ध्यानी होई।
गुरु ऐसो मीठो किछु नाहीं, जहँ गुरु तहाँ तिक्त मिटि जाहीं,
'कामयाब' को गुरु अति भावै, सो हित जो गुरु ताहि जियावै।।

—नूर मुहम्मद (अनुराग बाँसुरी)

गुरु कुछ नया नहीं देता। जो बीज रूप से रहता है, उसी को विकसित करने में सहायक होता है। मन्द सुगन्ध को बाहर निकालता है।

—साने गुरुजी

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागों पांय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।।

—महात्मा कबीर (कबीर ग्रन्थावली)

गुरु दियना बारु रे, यह अंध कूप संसार।
माया के रंग रची सब दुनिया, नहिं सूझ परत करतार।
पुरुष पुरान बसै घट भीतर, तिनुका ओट पहार।
मृग के नाभि बसत कस्तूरी, सूंघत भ्रमत उजार।
कहै कबीर सुनो भई साधो, छूटि गात भ्रम जार।

—महात्मा कबीर (कबीर ग्रन्थावली)

तिनको न कछू कबहूँ बिगरै, गुरु लोगन को कहनी जे करै।
जिनको गुरु पंथ दिखावत हैं, ते कुपंथ पै भूलि न पाँव धरै।।
जिनको गुरु रच्छत आप रहैं, ते बिगारे न बैरिन के बिगरै।
गुरु को उपदेस सुनो सब ही, जग कारज जासों सबै संभरै।।

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (भारतेन्दु नाटकावली)

गुरु हमार तुम राजा, हम चेला तुम नाथ।
जहाँ पाँव गुरु राखै, चेला राखे माथ।।

—मलिक मुहम्मद जायसी (जायसी ग्रन्थावली)

भले-बरे गुर जन वचन, लोपत कबहुँ न धीर।
राज-काज को छांड़ि कै, चले विपिन रघुबीर।।

—वृन्द (वृन्द सतसई)

जन रंजन होता नहीं, कर गंजन तम-मान।
दृग-रुज भंजन जो न गुरु, करते अंजन दान।।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (हरिऔध सतसई)

ज्ञान टके पर बिक गया, मान कहाँ से होय।
बिन मूल्य जो देत है, सच्चा गुरु है सोय॥

—मेलाराम (शिक्षासहस्री)

प्रभु प्रिय पूज्य पिता सम आपू।
कुल गुरु सम हित भाय न बापू॥

—तुलसीदास (रामचरित मानस)

पतिरेव गुरुस्त्रीणां सर्वस्याभ्यागतो गुरुः।
गुरुरग्नि द्विजातीनां वर्णानां ब्राह्मणो गुरुः॥

(स्त्रियों का गुरु उनका पति है, आया हुआ अतिथि सब का गुरु है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य इनका गुरु अग्नि है और चारों वर्णों का गुरु ब्राह्मण है।)

—चाणक्य

गुरोरवज्ञया सर्वं नश्यते च समुद्भवम्।
(गुरु की अवहेलना करने से सारा अभ्युदय नष्ट हो जाता है।)

—अज्ञात

गुरु को अगर हमने देह रूप से माना तो हमने गुरु से ज्ञान नहीं अज्ञान पाया।

—विनोबा भावे

गुलाम (दे० दास)

गुलाम मनोवृत्ति वीर पूजा या निःशंक होकर आज्ञा मानने की वृत्ति से अलग चीज है।

—महात्मा गांधी

जब गुलाम अपनी बेड़ी को आभूषण समझकर मुस्कराये, तब उसके मालिक की पूरी जीत हुई मानी जाती है।

—महात्मा गांधी

देह से ही नहीं जो दिल से भी गुलाम हो गये हैं, वे कभी आजादी हासिल नहीं कर सकते।

—महात्मा गांधी

माया नदी के प्रवाह में बह जाने वाले काम-शास्त्र के अनुयायी पतित वासनाओं के गुलाम होते हैं।

—विनोबा भावे

वे गुलाम हैं जिनमें यह हिम्मत नहीं है कि वे इंसाफ का साथ दें चाहे वे दो-तीन की संख्या में ही क्यों न हों।

—लोवेल

जो पुरुष अपने अंतःकरण का गुलाम बना रहता है, वह कभी नेता और प्रभावशाली पुरुष नहीं हो सकता।

—स्वेट मार्डन

गुलामी

गुलामी अत्याचार और डकैती की प्रणाली है।

—सुकरात

स्वर्ग की गुलामी की अपेक्षा तो नरक का अधिराज्य श्रेयस्कर है।

—विनोबा भावे

गुलामी पूर्ण अन्याय की एक व्यवस्था है।

—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

एक घंटे की गुलामी भी पूरा अन्याय है।

—विलियम पिट

गुलामी दुनिया का सबसे बड़ा घृणित पाप है।

—नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

गुस्सा (दे० क्रोध)

गुस्सा दिमाग की रोशनी को बुझा देता है। किसी भीषण समस्या के समय, किसी कठिन परीक्षा के समय मनुष्य को शान्त, प्रसन्नचित्त और सुस्थिर रहना चाहिए।

—कहावत

गुस्सा एक क्षणिक पागलपन है। इसे वश में करो नहीं तो वह तुम्हें वश में कर लेगा।

—होरेस

गुस्सा मूर्खता से आरम्भ होता है और पश्चात्ताप पर समाप्त होता है।

—पिथागोरस

गुस्सा एक प्रकार का क्षणिक पागलपन है।

—महात्मा गांधी

क्रोध के लक्षण शराब और अफीम दोनों से मिलते हैं। क्रोध के लक्षण क्रमशः सम्मोह, स्मृति भ्रंश और बुद्धिनाश माने गए हैं।

—महात्मा गांधी

जैसे ताप स्वरचित रहकर शक्ति में परिवर्तित होता है उसी प्रकार क्रोध को अधीन रखकर ऐसी शक्ति में परिवर्तित किया जा सकता है जो विश्व हिला दे।

—महात्मा गांधी

गुस्सा करना दूसरे की गलती का अपने से प्रतिशोध लेना है।

—पोप

गूँगा

प्रकृति के समान गूँगे की भी अपनी महिमा होती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

सू० को० ३।५

गोपनीय

हृदय की ऐसी कोई गुप्त बात नहीं है जिसे हमारे काम प्रकट न कर देते हों।

—मोलियर

अपने रहस्य को गोपनीय रखना बुद्धिमानी है; किन्तु दूसरों से उसे गोपनीय रखने की आशा रखना कोरी मूर्खता है।

—प्रो० डब्ल्यू० होम्स

गौरव

प्राचीन गौरव का नक्कारा खोखला होने से अधिक स्वर देता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (कुमुदिनी)

हम बाहर की वस्तु को ही अत्यन्त महान् समझते हैं, अन्तर से हमारा यातायात प्राय: है ही नहीं, इसलिए हमारे जीवन का गौरव नष्ट हो गया है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (अन्तर-बाहर)

गृहस्थ

तुच्छ सलिल के पुनि ये मीन। सरद ताप तपि भये जु दीन॥
कृपन दरिद्र कुटुम्बी जैसे। अजितेन्द्रिय दुख भरत हैं तैसे॥

—नंददास (नंददास ग्रंथावली)

जल संकोच विकल भई मीना। अबुध कुटुम्बी जिमि धनु हीना॥

—तुलसीदास (रामचरित मानस)

पालत इतर आश्रमन निज श्रम, ताते सब ते श्रेष्ठ गृहाश्रम।
पंथ जो तातागृही-प्रतिकूला, करत सो छिन्न धर्मतरु मूला॥

—द्वारकाप्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

रसवती जिसकी मृदु भारती,
गृहवधू शुभ पुत्रवती सती,
बहुल दानवती वर सम्पदा,
सफल जीवन है वह ही गृही।

—अनूप (वर्द्धमान)

धर्महि-हेतु गृहस्थ ते, सन्तति-हेतु विवाह।
ग्रहण त्याग हित, त्याग महँ रचहु नहिं यश चाह॥

—द्वारकाप्रसाद मिश्र (कृष्णायन)

एकेन भोगे भुञ्जेय्य, द्वीहि कम्म पयोजयो।
चतुर्थं च निधापेय्य, आपदासु भविस्सति॥

(सद्गृहस्थ प्राप्त धन राशि के एक अंश का स्वयं उपयोग करे, दो अंशों को व्यापार आदि कार्य-क्षेत्र में लगाए और चौथे अंश को आपद्-काल के लिए सुरक्षित रख छोड़े।)

—महात्मा बुद्ध (दीघनिकाय)

भद्रा वधूर्भवति यत् सुपेशाः;
स्वयं सा मित्रं वनुते जने चित्॥

(जो स्त्री सुशील सुन्दर और श्रेष्ठ है, वह जनसमूह में से इच्छानुकूल पुरुष को अपने पति या मित्र के रूप में वरण कर लेती है।)

—ऋग्वेद

पतिर्बन्धेषु बध्यते।
(गृहपति कर्तव्य के बन्धनों में बँधा हुआ है।)

—ऋग्वेद

यस्सेते चतुरो धम्मा, सद्धस्स घरमेसिनो।
सच्चं धम्मो धिती चागो, स वे पेच्चन सोचति॥

(जिस श्रद्धाशील गृहस्थ में सत्य, धर्म, श्रुति और त्याग के चार धर्म हैं, उसे परलोक में पछताना नहीं पड़ता।

—महात्मा बुद्ध (सुत्तनिपात)

माता-पिता दिसा पुब्बा, आचरिया दक्खिणा दिसा ।
पुत्तदारा दिसा पच्छा, मित्तमच्चा च उत्तरा ॥
दास कम्मकरा हेट्ठा, उद्धं समण-ब्राह्मणा ।
एता दिसा नमस्सेय्य, अलमत्तो कुले गिहा ॥

(माता-पिता पूर्व दिशा हैं, आचार्य दक्षिण दिशा हैं, स्त्री-पुत्र पश्चिम दिशा हैं, मित्र-अमात्य उत्तर दिशा हैं, सेवक और कर्मकर अधोदिशा हैं, श्रमण-ब्राह्मण ऊर्ध्व दिशा हैं। गृहस्थ को अपने परिवार में इन छः दिशाओं को भलीभाँति नमस्कार करना चाहिए, अर्थात् इनकी यथायोग्य सेवा करनी चाहिए।)

—महात्मा बुद्ध (दीघनिकाय)

सुस्सूसा सेट्ठा भरियान, यो च पुत्तानमस्सवो ।

(भार्याओं में सेवा करने वाली भार्या श्रेष्ठ है और पुत्रों में वह जो आज्ञाकारी है।)

—महात्मा बुद्ध (संयुत्तनिकाय)

अलसो गिही काम भोगी न साधु ।
असञ्जतो पब्बजितो न साधु ॥
राजा न साधु अनिसम्मकारी ।
यो पण्डितो कोधनो तं न साधु ॥

(सुख-समृद्धि का इच्छुक गृहस्थ का आलसी होना अच्छा नहीं, प्रव्रजित का असंयमी रहना अच्छा नहीं, राजा का अनिशम्यकारी होना श्रेयस्कर नहीं और पंडित का क्रोधी होना अच्छा नहीं।)

—महात्मा बुद्ध (जातक)

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः ।
जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम् ॥

(पुत्र स्वपिता के अनुकूल आचरण करे। माता पुत्र-पुत्रियों के एक-से मन वाली हो। पत्नी पति के साथ मधुर एवं सुखदायिनी वाणी बोले।)

—अथर्ववेद

सम्यञ्चा मिथुनावभ्यजाव।

(हम स्त्री-पुरुष दोनों परस्पर सम्यक् सहयोग करते हुए गृहस्थ धर्म का पालन करें।)

—ऋग्वेद

परा देहि शामुल्यं ब्रह्मभ्यो वि भजा वसु।

(हे गृहस्वामिनी ! तुम मलिन वस्त्रोंका त्याग करो और विद्वानों को दान दो।)

—ऋग्वेद

भगस्य नावमारोह पूर्णामनुपदस्वतीम्।
तयोपप्रतारय यो वरः प्रतिकाम्यः॥

(यह गृहस्थाश्रम सब तरह से परिपूर्ण और कभी ध्वस्त न होने वाली ऐश्वर्य की नौका है। हे गृहपत्नी ! तू उस पर चढ़ और अपने प्रिय पति को जीवन संघर्षों के सागर से पार कर।)

—अथर्ववेद

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्, मा स्वसारमुत स्वसा।
सम्यञ्चः सव्रता भूत्वा वाचं वदत भद्रया॥

(भाई-भाई परस्पर द्वेष न करें, बहिन-बहिन परस्पर द्वेष न करें। सब लोग समान गति और समान कर्म वाले होकर पारस्परिक कार्य करें और परस्पर कल्याणकारी शिष्ट भाषण करें।)

—अथर्ववेद

देवाः पितरः पितरो देवाः।

(जो पालन करते हैं वे देव हैं और जो देव हैं वे पालन करते हैं।)

—अथर्ववेद

यावज्जायां न विन्दते···असर्वोहितावद् भवति।

(गृहस्थ पुरुष जब तक पत्नी से युक्त नहीं हो पाता तब तक अपूर्ण रहता है।)

—शतपथ ब्राह्मण

गृहस्थ जीवन की सफलता यही है कि उसके द्वारा अतिथि सेवा हो।

—अज्ञात

प्रजया हि मनुष्यः पूर्णः।
(गृहस्थ मानव प्रजा (संतान) से ही पूर्ण होता है।)

—तैत्तरीय ब्राह्मण

पशवो विवाहाः।
(गाय-भैंस आदि पशु गृहस्थ जीवन के निर्वाहक हैं।)

—ऐतरेय ब्राह्मण

भार्या पुत्र पौत्रादयो गृहा उच्यन्ते।
(भार्या, पुत्र, पौत्र आदि ही गृह कहलाते हैं।)

—यजुर्वेदीय उव्वरभाष्य

बुद्धिमते कन्यां प्रयच्छेत्।
(बुद्धिमान् वर के साथ ही कन्या का विवाह करना चाहिए।)

—आश्वलायनीय गृह्यसूत्र

जो गृहस्थ यथाशक्ति अपने आश्रम धर्म का पालन करता है, वह मृत्यु के बाद अक्षय लोक प्राप्त करता है।

—वेदव्यास (महाभारत)

जो पुरुष धर्मानुकूल धन प्राप्त करके यज्ञ करता है, अतिथियों को खिलाता है वही सच्चा गृहस्थ है।

—वेदव्यास (महाभारत)

गृहिणी (दे० पत्नी)

जायेदस्तं मधुवन्!
(हे मघवन्! वस्तुतः गृहिणी ही गृह है।)

—ऋग्वेद

जाया विशते पतिम् ।

(योग्य गृहिणी (पत्नी) पति के मन, वचन, कर्म के साथ एकाकार हो जाती है।)

—ऋग्वेद

न मत् स्त्री सुभसत्तरा···विश्वस्मादिन्द्र उत्तरः ।

(मुझ से बढ़ कर अन्य कोई स्त्री भाग्यशालिनी नहीं है···मेरा भाग्यशाली पति सबसे श्रेष्ठ है।)

—ऋग्वेद

उत्तराहमुत्तर उत्तरेदुत्तराभ्यः ।

(मैं गृहिणी उत्तम हूँ और भविष्य में अधिक उत्तम होऊँगी।)

—ऋग्वेद

मम पुत्राः शत्रु हणोऽथो मे दुहिता विराट्
उताहमस्मि संजया, पत्यौ में श्लोक उत्तमः ।

(मेरे पुत्र शत्रुओं को जीतने वाले वीर हैं, मेरी पुत्री भी अत्यन्त शोभामयी है। मैं सब को प्रेम से जीत लेती हूँ, पति पर भी मेरे यश की श्रेष्ठ छाप है।)

—ऋग्वेद

भर्तुः शुश्रूषया नारी लभते स्वर्ग मुक्तमम् ।

(पतिव्रता स्त्री एकमात्र पति की सेवा-शुश्रूषा से ही श्रेष्ठ स्वर्ग को प्राप्त कर लेती है।)

—वाल्मीकि

अरिष्टाऽहं सह पत्यां भूयासम् ।

(मैं गृहिणी स्वपति के साथ सस्नेह अविच्छिन्न भाव से रहूँ।)

—ऋग्वेद

सदा प्रहृष्टया भाव्यं गृहकार्येषु दक्षया ।

(गृहिणी को सदैव प्रसन्न एवं गृहकार्य में दक्ष रहना चाहिए।)

—मनुस्मृति

अर्धं भार्या मनुष्यस्य, भार्या श्रेष्ठतमः सखा।

(भार्या (गृहिणी) पुरुष का आधा अंग है। भार्या सबसे श्रेष्ठ मित्र है।)

—वेदव्यास (महाभारत)

घर

लड़कियों का घर कहीं नहीं होता।

—प्रेमचन्द (निर्मला)

पहले घर में दीया जलाकर तब मस्जिद में जलाते हैं।

—प्रेमचन्द (झांकी)

जो कमाता है उसी का घर में राज होता है, यही दुनिया का दस्तूर है।

—प्रेमचन्द (सुजान भगत)

आदमी घर वालों ही केलिए धन कमाता है और किसी केलिए नहीं? अपना पेट तो सुअर भी पाल लेता है।

—प्रेमचन्द (गोदान)

जिस घर में कोई नहीं रहता उसमें चमगादड़ बसेरा करते हैं।

—प्रेमचन्द (नैराश्यलीला)

घर का भेदी लंका ढावे।

—कहावत

रहिमन अँसुआ नैन ढरि, जिय दुख प्रगट करेइ।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देइ॥

—रहीम (रहिमन विलास)

कौन बड़ाई जलधि मिलि, गंग नाम भो धीम।
केहि की प्रभुता नहीं घटी, पर घर गए 'रहीम'॥

—रहीम (रहिमन विलास)

जहाँ लरैं सुत बाप सँग, और भ्रात सों भ्रात।
तिनके मस्तक सों हटै, कैसे पर की लात॥

—बालमुकुन्द गुप्त

घर और दफ्तर में दूरी है उतनी जितनी स्नेह और स्वार्थ में। इसलिए अगर दफ्तर केन्द्र है तो घर बेकार है।

—जैनेन्द्रकुमार (सोच-विचार)

सच तो यह है कि जिसे खुलापन चाहिए वह मकान के चक्कर में ही न पड़े। मकान वही है जो घिरा है।

—जैनेन्द्रकुमार (जैनेन्द्र कहा० भाग ६)

वह इंसान, चाहे वह नरेश हो अथवा कृषक, सबसे भाग्यवान् है जिसे अपने घर में शान्ति मिलती है।

—गेटे

सत्स्त्रिया रक्ष्यते गृहम्।
(भली स्त्री से घर की रक्षा होती है।)

—चाणक्य

यन्मनीषि पदाम्भोज रजः कणपवित्रितम्।
तदेव भवनं नो चेद भकारस्तत्र लुप्यते॥

(भवन वही है जो मनीषियों के चरण-कमल की धूलि से पवित्र हो चुका है, और यदि ऐसा नहीं है तो उसमें भकार लुप्त हो जाता है अर्थात् वह घर वन के समान होता है।)

—अज्ञात

घरौंदा

मनुष्य दुश्मन का सुदृढ़ गढ़ तोड़ सकता है मगर अबोध बालक का मिट्टी का घरौंदा तोड़ने की शक्ति किसमें है।

—प्रेमचन्द

घृणा

माना तुम हो सभ्य और यह महा असभ्य है।
रचे-बापचे तुम भव्य और यह सभी नव्य है।
तुम तो हो उस्ताद और यह नया खिलाड़ी।
तुम हो कला-प्रवीण और यह निरा अनाड़ी।
किसी बात को ले विरोध हो जाना भी संभव है।
मत घृणा करो, यह भी तुम जैसा ही मानव है।।

—सागरमल (कुछ कलियाँ : कुछ फूल)

पाप से घृणा करो, पापी से नहीं।

—महात्मा गांधी

घायल

घायल की गति घायल जाने और न जाने कोय।

—मीराबाई

घाव

घाव पर कपड़ा भी छुरी बन काटने लगता है। दुखे हुए अंग को हवा भी दुःखा देती है।

—सुदर्शन

घूँस (दे० रिश्वत)

लीन्ह अँकोर हाथ जेहि, जीउ दीन्ह तेहि हाथ।
जहाँ चलावै तहँ चलै, फेरे फिरै न माथ।।
लोभ पाप के नदी अँकोरा। सत्त न रहै हाथ जो बोरा।
जहाँ अँकोर तहँ नीक न राजू। ठाकुर केर बिना सैकाजू।।

—मलिक मुहम्मद जायसी (जायसी ग्रंथावली)

धनिक-दोषी न्याय को भी मार्ग दर्शाते हैं और ऐसा भी देखा गया है कि घूंस कानून को भी मोल ले लेती है।

—शेक्सपियर

जूते में भी जड़ सको 'नाल' चाँदी का,
तो सर हाजिर, मुँह बन्द पुलिस वाँदी का।

—मैथिलीशरण गुप्त (राजा-प्रजा)

चंचलता

पानी जैसी चंचलता को रोको जीवन, इसके फेर में पड़कर मनुष्य ऊँचा नहीं उठ सकता।

—शरण (काँच और कंचन)

चंद्रमा

चन्द्रमा अपना प्रकाश सम्पूर्ण गगन में फैलाता है; परन्तु अपना कलंक अपने पास ही रखता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

चाँद एक कन्या है और यह पृथ्वी का काला सौन्दर्य उसका आवरण।

—अज्ञेय (शेखर : एक जीवनी, भाग-१)

चक्रवर्ती

चक्रवर्ती राज्य का नाश उस समय तक नहीं होता, जब तक कि आपस में फूट न हो।

—स्वामी दयानन्द सरस्वती

वसुन्धरा के समान चक्रवर्ती का हृदय भी उदार और सहनशील होना चाहिए।

—जयशंकर प्रसाद

जिस देश को चक्रवर्ती राजा प्राप्त हो वह देश देवलोक हो जाता है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

जो पुरुष पवित्र होकर जगत् के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर देता है वह चक्रवर्ती से भी अधिक सत्ता भोगता है।

—महात्मा गांधी

स्वर्गलोक तो पुण्य के प्रभाव से भी मिल सकता है; परन्तु चक्रवर्ती पद उससे भी श्रेष्ठ है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

चतुर

देशाटनं पंडित मित्रता च वारांगना राज सभा प्रवेशः।
अनेक शास्त्रार्थ विलोकनं च चातुर्यमूलानिभवन्ति पंच॥

(देशों का भ्रमण, पण्डितों के साथ मैत्री, वेश्याप्रसंग, राजसभा में बैठना और अनेक शास्त्रों का अनुशीलन करना ये पाँच चतुर होने के मुख्य कारण हैं।)

—अज्ञात

चतुर सभा में कूर नर, सोभा पावत नाँहि।
जैसे वक सोभित नहीं, हंस-मंडली माँहि॥

—वृन्द (वृन्द सतसई)

भीरु छिपावतु जीव ज्यौं, कृपण छिपावतु दामु।
सूर छिपावत शक्ति त्यौं, चतुर छिपावतु नामु॥

—वियोगी हरि (वीर सतसई)

नहिं पढ़ायो पुत्र कों, सो पितु बड़ो अभाग।
सोहत सुत सो बुध सभा, ज्यों हंसन में काग॥

—दीनदयाल गिरि (गिरि ग्रंथावली)

जैसे धूम प्रभाव तें, गगन न होत मलीन।
तथा कुसंगति पाय कै, मलिन न होंहि प्रवीन ।।

—कुलपति मिश्र (रस-रहस्य)

चरखा

चरखा भूखे की रोटी, अन्धे की लकड़ी और विधवा का सहारा है।

—महात्मा गांधी

चरखे की पुकार दूसरी सब पुकारों से मधुर है। क्योंकि वह प्रेम की पुकार है।

—महात्मा गांधी

चरखा तो लँगड़े की लाठी है—सहारा है। भूखे को दाना देने का साधन है। निर्धन स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा करने वाला किला है।

—महात्मा गांधी

मनुष्य की नग्नता को ढकना यह चरखे का दावा है।

—विनोबा भावे

चरखा आनन्द का साधन है।

—विनोबा भावे

चरखे के द्वारा माता बच्चे को देश-प्रेम सिखा सकती है।

—विनोबा भावे

यह चर्खा चक्र-सुदर्शन है।
मनोहर जिसका दर्शन है।।
असहयोग का आज छिड़ा है देवासुर संग्राम;
हमें विजय लक्ष्मी यह देगा, बड़ा करेगा काम।
यहाँ की यह मशीनगन है।
यह चर्खा चक्र सुदर्शन है।।

—रूपनारायण पांडेय (पराग)

चरित्र

मानव-चरित्र न बिल्कुल श्यामल होता है, न बिल्कुल श्वेत। उसमें दोनों ही रंगों का विचित्र सम्मिश्रण होता है, किन्तु स्थिति अनुकूल हुई, तो वह ऋषि तुल्य हो जाता है, प्रतिकूल हुई तो नराधम।

—प्रेमचन्द (प्रेमाश्रम)

बहुत विद्वान् होने से ही मनुष्य आत्म-गौरव नहीं प्राप्त कर सकता। इसके लिए सच्चरित्र होना परमावश्यक है। चरित्र के सामने विद्या का मूल्य बहुत कम है।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

मानवीय चरित्र इतना जटिल है कि बुरे से बुरा आदमी देवता हो जाता है और अच्छे से अच्छा भी पशु।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

चरित्र बिना कामयाबी के भी रह सकता है।

—एमर्सन

व्यक्तिगत चरित्र समाज की बड़ी आशा है।

—चैनिंग

चरित्र सम्पत्ति है। यह सम्पत्ति में सर्वश्रेष्ठ है।

—स्माइल्स

चरित्र एक पेड़ है और ख्याति उसकी छाया है। छाया वही है जो हम उसके विषय में सोचते हैं; किन्तु पेड़ वास्तविक वस्तु है।

—लिंकन

चरित्र एक ऐसा अनमोल हीरा है, जो हर किसी पाषाण को घिस सकता है।

—बर्टल

चरित्र ही मनुष्य की पूंजी है।

—एमर्सन

चरित्र में परिवर्तन नहीं होता, विचार परिवर्तित होते रहते हैं, पर चरित्र विकसित अवश्य किया जाता है।

—डिजरायली

कर्म को बोओ और आदत को काटो; आदत को बोओ और चरित्र को काटो; चरित्र को बोओ और भाग्य को काटो।

—बोर्डमैन

चरित्र जिन्दगी में शासन करने वाला तत्त्व है और वह प्रतिभा से उच्च है।

—फ्रैडरिक सांडर्स

चरित्र की शुद्धि ही सारे ज्ञान का ध्येय होना चाहिए।

—महात्मा गांधी

समाज के प्रचलित विधि-विधानों के उल्लंघन का दुःख सिर्फ चरित्र-बल और विवेक-बुद्धि के बल पर ही सहन किया जा सकता है।

—शरच्चन्द्र (शेष प्रश्न)

दुर्बल चरित्र का व्यक्ति उस सरकंडे जैसा है जो हवा के हर झोंके पर झुक जाता है।

—माघ

यह चरित्र ही है जो विपत्तियों की अभेद्य दीवारों में से भी मार्ग बना लेता है।

—स्वामी विवेकानन्द

चरित्र निर्माण उससे होता है जिसके लिए आप दृढ़ता से खड़े होते हैं।

—यूल कौर

चरित्र के लिए उतनी घातक कोई वस्तु नहीं जितने अपूर्ण कार्य।

—डॉ० ला० जार्ज

चरित्रों से मनुष्य नही बनते। मनुष्य चरित्रों का निर्माण करते हैं।

—उदयशंकर भट्ट (इरावती)

चरित्र का परिवर्तन या उत्कर्ष वर्जन से नहीं होता, योग से होता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य में नवीनता)

चरित्र का विकास प्रवृत्तियों के गूढ़ अस्तित्व से नहीं होता, वह होता है सृष्टि-प्रक्रिया के अचिन्तनीय योग-साधन से।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य में नवीनता)

निःश्वास तथा प्रश्वास की क्रिया के समान हमारे चरित्र में एक ऐसी सहज क्षमता होनी आवश्यक है जिसके बल पर जो कुछ प्राप्य है वह अनायास ग्रहण कर लें तथा जो कुछ त्याज्य है वह बिना क्षोभ के त्याग कर सकें।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (दुःख)

मानव-चरित्र बहुत ही दुर्बोध वस्तु है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

नर का भूषण विजय नहीं,
केवल चरित्र उज्ज्वल है।

—रामधारीसिंह 'दिनकर'

चिंतन कर यह जान कि तेरी क्षण-क्षण की चिन्ता से,
दूर-दूर तक के भविष्य का मनुज जन्म लेता है;
उठा चरण यह सोच कि तेरे पद के निक्षेपों की,
आगामी युग के कानों में ध्वनियाँ पहुँच रही हैं।

—रामधारीसिंह 'दिनकर'

गुण एकान्त में भलीभाँति विकसित होता है; चरित्र का निर्माण विश्व के भीषण कोलाहल में होता है।

—गेटे

मानव-चरित्र की एक विशेषता यह है कि हम बहुधा ऐसे काम कर डालते हैं, जिन्हें करने की इच्छा नहीं होती। कोई गुप्त प्रेरणा हमें इच्छा के विरुद्ध ले जाती है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

चरित्र शुद्धि ठोस शिक्षा की बुनियाद है।

—महात्मा गांधी

सुगन्धि दर्शनीयं च लोकरंजन तत्परं।
दृष्ट्वा कुसुममारामे सर्वैरप्यभिनन्दितम् ।।
प्रसादसुमुखःशील चारित्र्याभ्यां सुवासितः।
उद्युक्तो लोक सेवायां भवेयमिति भावये ।।

(उपवन में सुगन्धित, सुन्दर लोकों के रंजन में तत्पर और साथ ही सबके द्वारा अभिनंदित पुष्प को देखकर मेरे मन में आता है कि मुझे भी प्रसन्न मुखशील और चारित्रिक सुगन्ध से सुगन्धित तथा लोकसेवा में तत्पर होना चाहिए।

—अज्ञात

चरित्र बल पर ही मानव दैनिक कार्य, प्रलोभन और परीक्षा के विश्व में दृढ़तापूर्वक स्थिर रहते हैं और वास्तविक जीवन की क्रमिक क्षीणता को सहन करने योग्य होते हैं।

—स्माइल्स

चरित्र की जाँच आदर्श नियमों से की जाती है।

—प्रेमचन्द (प्रतिज्ञा)

चरित्रोन्नति के लिए भी विविध प्रकार की परिस्थितियाँ अनिवार्य हैं। दरिद्रता को काला नाग क्यों समझें? चरित्र-संगठन के लिए यह सम्पत्ति से कहीं महत्त्वपूर्ण है। यह मनुष्य में दृढ़ता और संकल्प, दया और सहानुभूति के भाव उदय करती है। प्रत्येक अनुभव चरित्र के किसी न किसी अंग की पुष्टि करता है।

—प्रेमचन्द (प्रेमाश्रम)

चापलूस-चापलूसी

मीठी बातें तो वह करता है, जिसका कुछ स्वार्थ होता है, जो डरता है, जो प्रशंसा अथवा मान का भूखा रहता है।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

जब चापलूस मिलते हैं तो दानव भोजन करने चला जाता है।

—डीफो

चापलूस अत्यन्त निकृष्ट प्रकार के शत्रु हैं।

—टेसीटस

अनुकरण करना सबसे बड़ी निष्कपट चापलूसी है।

—कोल्टन

चापलूसी एक बनावटी सिक्का है और बनावटी सिक्के की भाँति वह अन्ततः आपको कष्ट में डाल देगी यदि आप इसे चलाने का प्रयास करेंगे।

—डेलक्लार नेगी

आत्म-प्रेम चापलूसों में सबसे बड़ा चापलूस है।

—ला० रोशोको

जो दुश्मन तुम पर हमला करते हैं उनसे तुम मत डरो, उन दोस्तों से डरो, जो तुम्हारी चापलूसी करते हैं।

—जनरल ओब्रगोन

सब से बड़ी चापलूसी यह है कि दूसरे इंसान को बोलने दें और आप स्वयं सुनता रहें।

—एडीसन

चापलसी दिखावटी मित्रता के समान है।

—सुकरात

चापलूसी का जहरीला प्याला आपको तब तक नुकसान नहीं पहुँचा सकता जब तक कि आपके कान अमृत समझ कर पी न जायें।

—प्रेमचन्द

चिन्तन

हम अपने विषय में जो दृढ़ चिन्तन करते हैं, जिन विचारों में लीन रहते हैं, क्रमशः वैसे ही बनते जाते हैं।

—अज्ञात

चिन्ता

चाह गई चिन्ता मिटी, मनुआ वेपरवाह।
जिनको कछू न चाहिए, सोई सहंसाह॥

—कबीर ग्रन्थावली

बिन चाहै सब ही मिलै, चाहै कछु न मिलैत।
बालक मुख जोरावरी, माता भाता देत॥

—ज्ञानसार

कार्य की अधिकता मनुष्य को नहीं मारती, बल्कि चिन्ता मारती है।

—स्वेट मार्डन (चीयरफुलनैस)

चिन्ता ने आज तक कभी किसी कमी को पूरा नहीं किया।

—स्वेट मार्डन (चीयरफुलनैस)

मस्तिष्क-संस्थान के अंशों पर चिन्ता ऐसे घाव कर डालती है, जिनका दूर करना कठिन होता है। जिस प्रकार एक ही स्थान पर पानी की बूंद लगातार पड़ती रहे, तो उससे गढ़ा हो जाता है, ठीक उसी प्रकार एक ही बात का विचार करते रहने से, एक ही बात एकाग्र होकर सोचते रहने से मस्तिष्क के सैल नष्ट हो जाते हैं।

—स्वेट मार्डन (चीयरफुलनैस)

'विश्राम' चि ता का सबसे बड़ा और निश्चित शत्रु है।

—स्वेट मार्डन (चीयरफुलनैस)

चिन्ता हर प्रकार की सुन्दरता और स्वास्थ्य की शत्रु है।

—स्वेट मार्डन (चीयरफुलनैस)

जिनका स्वभाव निरन्तर चिन्ता करने का हो जाता है, वे दूसरों की अपेक्षा अधिक कष्ट सहते हैं। वे अपने पड़ोसियों की तरह आराम नहीं पाते।

—स्वेट मार्डेन (चीयरफुलनैस)

यदि मनुष्य चिन्ता को तुरन्त उतारकर न फेंक दे तो फिर ऐसी स्थिति आ जाती है कि मनुष्य उसे दूर फेंकने में असमर्थ हो जाता है।

—स्वेट मार्डेन (चीयरफुलनैस)

चिन्ता—पागल बना देने वाला एक ही विचार था वह तीव्र विचार जो इच्छा करने पर भी मस्तिष्क पर प्रभाव डालने से दूर न हो सके—एक ऐसी हथौड़ी है, जो मस्तिष्क के सूक्ष्म एवं सुकोमल सूत्रों तथा तन्तु-जाल को विघटित करके उसकी कार्यकारिणी शक्ति को नष्ट कर देती है।

—स्वेट मार्डेन (चीयरफुलनैस)

मेरा विश्वास है कि चिन्ता जिन्दगी की दुश्मन है।

—शेक्सपियर

यदि तुम्हारी आदत है तो चिन्ता करके कष्टों का आह्वान कर लो किन्तु उसे अपने पड़ोसी को उधार मत दो।

—रुडार्ड किप्लिंग

व्यापारी, जिसे यह ज्ञान नहीं कि चिन्ता से कैसे दूर रहना चाहिए, शीघ्र मृत्यु को पहुँच जाते हैं।

—डॉ० केरेल

चिन्ता एक प्रकार की कायरता है और वह जीवन को विषमय बना देती है।

—चैनिंग

चिन्ता जब अधिक हो जाती है तब उसकी शाखाएं-प्रशाखायें इतनी निकलती हैं कि मस्तिष्क उनके साथ दौड़ने में थक जाता है।

—जयशंकर प्रसाद (कंकाल)

चिन्ता करता हूँ मैं जितनी
उस अतीत की, उस सुख की;
उतनी ही अनंत में बनती
जाती रेखायें दुःख की ।

—जयशंकर प्रसाद (कामायनी)

पिछले पहर चिंता भी थक कर सो जाती है। सारी रात करवटें बदलने वाला प्राणी भी इस समय निद्रा में मग्न हो जाता है।

— प्रेमचन्द (कायाकल्प)

भविष्य की भीषण चिन्ता आन्तरिक सद्भावों का सर्वनाश कर देती है।

प्रेमचन्द (निर्मला)

चिन्ता एक काली दीवार की भाँति चारों ओर से घेर लेती है, जिसमें से निकलने की फिर कोई गली नहीं सूझती।

—प्रेमचन्द (गोदान)

जब अपनी चिन्ताओं से हमारे सिर में दर्द होने लगता है तो विश्व की चिन्ता सिर पर लादकर कोई कैसे प्रसन्न रह सकता है।

—प्रेमचन्द (गोदान)

चिन्ता ही से चिन्ता दूर होती है। इसे धोखे से रोकने का प्रयास करने से परिणाम उल्टा होता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (कुमुदिनी)

'रहिमन' कठिन चितान ते, चिन्ता को चित चेत।
चिता दहति निर्जीव को, चिंता जीव समेत ।।

—रहिम (रहिमन विलास)

चिन्ता-जननी चाह है, ताको पति अविवेक ।
जो विवेक की चाह तो, राम नाम जपु एक ।।

—रामचरित उपाध्याय (सतसई)

चिन्ता से जिसको न आप अपने देहादि का ज्ञान हो—
क्या आश्चर्य न और का यदि उसे आते हुए ध्यान हो ?

—मैथिलीशरण गुप्त (शकुन्तला)

बिना तजे दुर्वृत्त औ, लाभ किये सद्वृत्त ।
होयेगा निश्चित क्यों चिन्तित चित्त ।।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (हरिऔध सतसई)

उस अचित्य प्रभु की कृपा, हुई नहीं भरपूर ।
चिंतित चित ! चिन्ता कहो, कैसे होवे दूर ।।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (हरिऔध सतसई)

जब दाँत न थे तब दूध दियो अब दाँत भए कहा अन्न न दैहै ।
जीव बसे जल में थल में तिन की सुधि लेइ सौ तेरीहु लैहै ।।
जान को देत अजान को देत जहान को देत सौ तोहूं कूँ दैहै ।
काहे को सोच करै मन मूरख सोच करैं कछु हाथ न ऐहै ।।

—बीरबल (अकबरी दरबार के हिन्दी कवि)

त्याज्या भविष्यतश्चिन्ता नैव सा कार्यसाधिका ।
क्रियते चेत् तदाकार्या, चारित्रस्य समुन्नतेः ।।

(भविष्य की चिन्ता छोड़ देनी चाहिए, उससे कोई कार्य सिद्ध नहीं होता । यदि चिन्ता की ही जाए तो चरित्र की उन्नति की ही करनी चाहिए ।)

—अज्ञात

चिन्ता शहद की मक्खी के समान है । इसे जितना हटाओ उतना ही और चिपटती है ।

—अज्ञात

वासनाओं का त्याग करो, चिन्ताएँ स्वयं पीछा छोड़ देंगी ।

—अज्ञात

प्राणियों के लिए चिन्ता ही ज्वर है ।

—स्वामी शंकराचार्य

आलसी मनुष्य ही चिन्ताग्रस्त रहा करता है। वह आलस्य चाहे शारीरिक कष्ट से बचने के लिए हो या मानसिक।

—अज्ञात

चिन्ता चंगुल ही पर्‌यो, तो न चिता को संग।
यह सोखै बूंदन जियत, मुयें जात वा अंक॥

—श्रीपति

चिन्ता से रूप, शक्ति और ज्ञान नष्ट हो जाता है।

—अज्ञात

चिकित्सक

पापी हृदय का रोग विश्व के सभी राष्ट्रों के चिकित्सकों की चिकित्सा के परे है।

—ग्लैडस्टन

संयम और श्रम मानव के दो सर्वोत्तम चिकित्सक हैं। श्रम से भूख तेज होती है और संयम अतिभोग को रोकता है।

—रूसो

चिकित्सकों की सबसे बड़ी कमी यह है कि वे बिना मन को आरोग्य किए देह को अच्छा करने का प्रयास करते हैं, जबकि मन और देह एक ही हैं, अतः उनकी पृथक्-पृथक् चिकित्सा नहीं होनी चाहिए।

—प्लेटो

एक निपुण शल्य चिकित्सक के पास गिद्ध के नेत्र सिंह का हृदय और स्त्री जैसा कोमल हाथ होना चाहिए।

—कहावत

चितवन

अमिय हलाहल मद भरे, श्वेत श्याम रतनार।
जियत मरत झुकि झुकि परत, जेहि चितवन एक बार॥

—बिहारी

अनियारे दीरघ नयनि, कितीन तरुनि जहान ।
वह चितवन औरै कछू जेहि बस होत सुजान ।।

—बिहारी

चित्त (दे० मन)

जब हमारा चित्त गतिशील रहता है तो वह अपनी गति के संघात में छोटे से रोड़े को भी अनुभव करता है, उससे कुछ भी अगोचर नहीं रह पाता ।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (पाप)

दुर्बल तथा क्षीण के चित्त के लिए भाव का खाद्य कुपथ्य हो उठता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (भावुकता और पवित्रता)

चित्त जब विषयों के भीतर विषयातीत सत्य को प्राप्त करता है तो प्रजापति जिस प्रकार अपने छिलके को तोड़कर बाहर निकालता है, उसी प्रकार वह वैराग्य द्वारा आसक्ति बन्धन छिन्न कर डालता ।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (वैराग्य)

चाकर हैं सब चित्त के, क्या चकोर क्या कोक ।
खिले कमल अवलोक रवि, कुमुद मयंक विलोक ।।
अपने अपने भाव हैं, अपने अपने साथ ।
भूले आक-प्रसून पर, भोले भोलानाथ ।।

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

चित्तस्मि वसोभूतम्हि, इद्धिपादा सुभाविता ।
(चित्त के वशीभूत हो जाने पर ऋद्धियां स्वयं ही प्राप्त हो जाती हैं।)

—महात्मा बुद्ध (संयुत्तनिकाय)

यतो यतो मनो निवारये,
न दुक्खयेति न ततो ततो।
स सब्बतो मनो निवारये,
स सब्बतो दुक्खा पमुच्चति ॥

(जो मनुष्य जहाँ-जहाँ से मन को हटा लेता है, वहाँ-वहाँ से फिर उसको दुःख नहीं होता। जो सभी जगहों से मन को हटा लेता है, वह सभी जगह दुःख से छूट जाता है।)

—महात्मा बुद्ध (संयुत्तनिकाय)

न सब्बतो मनः निवारये,
न मनो संयतत्तमागतं।
यतो यतो च पापकं,
ततो ततो मनो निवारये ॥

(सभी जगह से मन को हटाना आवश्यक नहीं है, यदि मन अपने नियन्त्रण में आ गया है तो जहाँ-जहाँ भी पाप है, बस वहाँ-वहाँ से ही मन को हटाना है।)

—महात्मा बुद्ध (संयुत्तनिकाय)

चित्तेन नीयति लोको।
(चित्त से ही विश्व नियन्त्रित होता है।)

—महात्मा बुद्ध (संयुत्तनिकाय)

मनोपुब्बंगमाधम्मा, मनो सेट्ठा मनोमया।
मनसा चेपउट्टेन, भासति वा करोति वा।
ततो नं दुक्खमन्वेति, चक्कं व वहतो पदं ॥

(सभी धर्म-वृत्तियाँ पहले मन में उत्पन्न होती हैं। मन ही मुख्य है, सब-कुछ मनोमय है। यदि कोई मनुष्य दूषित मन से कुछ बोलता है, करता है, तो दुःख उसका अनुसरण उसी तरह करता है जिस तरह पहिया गाड़ी खींचने वाले बैलों के पैरों का।)

—महात्मा बुद्ध (धम्मपद)

मनोमयं गेहसितं च सव्वं ।

(यह सारा गृहबंधन मन पर ही खड़ा है।)

—महात्मा बुद्ध (संयुत्तनिकाय)

यथा गारं सुच्छन्नं, वुट्ठी न समति विज्झति ।
एवं सुभावितं चित्तं, रागो न समति विज्झति ।।

(भली भाँति छाए हुए घर में वर्षा का जल सुगमता से प्रवेश नहीं कर पाता, ठीक वैसे ही साधे हुए मन में राग का प्रवेश नहीं हो सकता।)

—महात्मा बुद्ध (धम्मपद)

चित्तस्स दमथो साधु, चित्तं दन्तं सुखावहं ।

(चंचल मन का दमन करना अच्छा है, दमन किया हुआ मन सुखकर होता है।)

—महात्मा बुद्ध (धम्मपद)

मनो पुव्वंगमा धम्मा मनोसेट्ठा मनोमया ।
मनसा चे पसन्नेन, भासति वा करोति वा ।
ततो नं सुखमन्वेति, छाया व अनपायिनि ।।

(सभी धर्म वृत्तियाँ पहले मन उत्पन्न होती हैं, मन ही मुख्य है, सब कुछ मनोमय है। यदि कोई स्वच्छ मन से कुछ बोलता या करता है तो सुख उसका अनुसरण उसी तरह करता है जिस तरह कभी साथ नहीं छोड़ने वाली छाया मानव का अनुसरण करती है।)

—महात्मा बुद्ध (धम्मपद)

पाणिम्हि चे वणोनास्स, हरेय्य पाणिना विसं ।
नाब्बणं विसमन्वेति, नत्थि पापं अकुब्बतो ।।

(यदि हाथ में घाव न हो तो उस हाथ में विष लेने पर भी देह में विष का प्रभाव नहीं होता है। इसी तरह मन में पाप रखने वाले को बाहर से धर्म का पाप नहीं लगता।)

—महात्मा बुद्ध (धम्मपद)

चित्तं, भिक्खवे रक्खितं महतो अत्थाय संवत्तति।
(भिक्षुओ ! सुरक्षित चित्त महान् लाभ के लिए होता है।)

—महात्मा बुद्ध (अंगुत्तरनिकाय)

खुद्दा वितक्का सुखुमा वितक्का,
अनुग्गता मनसो उप्पिलावा।

(हृदय में उठने वाले असंख्य क्षुद्र और सूक्ष्म वितर्क ही मन को उत्पीड़ित करते हैं।)

—महात्मा बुद्ध (उदान)

चरं वा यदि वा तिट्ठं, निसिन्नो उदवा सयं।
अज्झत्थं समयं चित्तं, संति मेवाधिगच्छति॥

(चलते, खड़े होते, बैठते अथवा सोते हुए जो अपने मन को शान्त रखता है, वह अवश्य ही शांति प्राप्त कर लेता है।)

—महात्मा बुद्ध (इतिवुत्तक)

निविस्सावादी नहि सुद्धि नायो।
(जो किसी वाद में लिप्त है, उसके मन की शुद्धि नहीं हो सकती।)

—महात्मा बुद्ध (सुत्तनिपात)

पदुट्ठ चित्तस्स न फाति होंति,
न चापि तम् देवता पूजयन्ति।

(दुष्ट मन वाले मनुष्य का विकास नहीं होता और न ही उसका देव सम्मान करते हैं।)

—महात्मा बुद्ध (जातक)

कुसलचित्ते कग्गता समाधि।
(कुशल मन की एकाग्रता ही समाधि है।)

—महात्मा बुद्ध (विसुद्धिमग्ग)

सुखिनो चित्तं समाधीयति।
(सुखी का मन एकाग्र होता है।

—महात्मा बुद्ध (विसुद्धिमग्ग)

समाहितं वा चित्तं थिरतरं होति।
(एकाग्र हुआ मन ही पूर्ण स्थिरता को प्राप्त होता है।)

—महात्मा बुद्ध (विसुद्धिमग्ग)

चेतो पणिधिहेतु हि, सत्ता गच्छन्ति सुग्गति।
(मन की एकाग्रता एवं समाधि से ही मनुष्य सद्गति प्राप्त करते हैं।)

—महात्मा बुद्ध (विमानवत्थु)

एको समाधि चित्तस्स एकग्गता।
(एक समाधि है—मन की एकाग्रता।)

—महात्मा बुद्ध (चुल्लनिद्देस पालि)

अतीतानुधावनं चित्तं विक्खेपानुपतितं समाधिस्स परिपन्थो।
अनागत पटि कंखनं चित्तं विकम्पितं समाधिस्सपरिपन्थो॥
(अतीत की ओर भागने वाला विक्षिप्त मन समाधि का शत्रु है।
भविष्य की इच्छा से प्रकंपित मन समाधि का शत्रु है।

—महात्मा बुद्ध (पटिसम्भिदामग्गो)

चित्र

चित्रकला मुख्यतः अभिव्यक्ति का एक माध्यम है और एक दर्शन है।

—केनेथ कालाहन

चित्र एक शब्दरहित कविता है।

—होरेस

जिस कक्ष में बहुत से चित्र लटक रहे हैं, वह ऐसा कक्ष है जिसमें बहुत से विचार लटक रहे हैं।

—सर जोशिया रेनाल्डस

चित्रकारी मूक कविता और कविता बोलती हुई तस्वीर है।

—सिमनडीज

चुगलखोर

गुणिनां गुणेषु सत्स्वपि पिशुनजनो दोषमात्र मादत्ते।
पुष्पे फले विरागी क्रमेलकः कण्टकोघभिव ।।

(जैसे ऊँट को किसी वृक्ष के फल-फूल से अनुराग नहीं होता, उसे काँटों का ढेर ही प्यारा लगता है, वैसे ही गुणियों में असंख्य गुणों के मौजूद रहने पर भी चुगलखोर उनमें दोष ही खोजता है और ग्रहण करता है।

—अज्ञात

नेकी से विमुख हो जाना और बदी करना निःसन्देह बुरा है, किन्तु सामने हँसकर बोलना और पीछे-पीछे चुगलखोरी करना उससे भी बुरा है।

—संत तिरुवल्लुवर

चुगलखोर कुत्ते के समान है; क्योंकि दोनों ही अपनी जिह्वा से सत्पात्र को दूषित करते हैं, कलह करने में पक्के होते हैं और दोनों ही सदैव अशुद्ध रहते हैं।

—अज्ञात

चुनना

भगवान हरेक मस्तिष्क को असत्य और सत्य में से एक को चुनने का अवसर प्रदान करता है।

—एमर्सन

चुनाव

सच्चे मित्रों के चुनाव के पश्चात् सर्वप्रथम एवं प्रधान आवश्यकता है उत्कृष्ट पुस्तकों का चुनाव।

—कोल्टन

चुनाव जनता को राजनीतिक शिक्षा देने का विश्वविद्यालय है।

—जवाहरलाल नेहरू

चुनाव युद्ध नहीं, तीर्थ है, पर्व है—वह पानीपत नहीं, कुरुक्षेत्र नहीं, वह प्रयाग है, त्रिवेणी है, सिंहस्थ है, कुम्भ है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

चुम्बन

ईश्वर अपने प्रेम में सीमित को चूमता है और मनुष्य अनन्त को।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

मेरी माता के चुम्बन ने मुझे चित्रकार बना दिया।

—बेंजमिन वेस्ट

चूल्हा

चूल्हा गृहस्थ आश्रम का प्रतीक है, आत्मीयता की दीक्षा है, कुटुम्ब-परम्परा का संरक्षण है।

—काका कालेलकर

चेतावनी

ध्वंसों में यदि सिर न उठाया,
सर्जन का यदि गीत न गाया,
स्वर्गलोक की आशाओं पर फिर जायेगा पानी!
मानी, देख न कर नादानी॥

—हरिवंशराय बच्चन (सतरंगिनी)

मानी, देख न कर नादानी।
मातम का तम छाया, माना,
अंतिम सत्य इसे यदि जाना,
तो तूने जीवन की अब तक आधी सुनी कहानी।
मानी, देख न कर नादानी!

—हरिवंशराय बच्चन (सतरंगिनी)

सुन यदि तूने आशा छोड़ी,
तो अपनी परिभाषा छोड़ी,
तुझे मिली थी यह अमरों की केवल एक निशानी।
मानी, देख न कर नादानी !

—हरिवंशराय बच्चन (सतरंगिनी)

पर प्रपंच पर दर्व पर स्त्री निसु दिन फिरत रहन निजु नत्ते।
अप्पट पाग लप्पटि बात निप्पटि अवीस करत नित दत्ते ॥
'नरहरि' हलत झुकत वरबोल्लत गावत जोवन अधर धरि दत्ते।
तब ते समुझि सकुचि विरचप्पन किए ते काज जोवन मद मत्ते ॥

—नरहरि (अकबरी दरबार के कवि)

कहा कियो हम आइ करि, कहा कहेंगे जाइ।
इत के भये न उत्त के, चाले मूल गंवाइ॥
इहि औसरि चेत्या नहीं, पसु ज्यूं पाली देह।
राम नाम जाप्या नहीं अंति पड़ी मुख खेह॥

—कबीर ग्रन्थावली

चेहरा

अच्छा चेहरा सर्वश्रेष्ठ प्रशंसापात्र है।

—महारानी एलिजाबेथ

सभी पुरुषों के चेहरे वास्तविक होते हैं, उनके हाथ चाहे जैसे भी हों।

—शेक्सपियर

हँसमुख चेहरा रोगी के लिए उतना ही हितकर है जितनी कि स्वस्थ ऋतु।

—फ्रैंकलिन

चेहरा मस्तिष्क और हृदय दोनों का प्रतिबिम्ब है।

—अज्ञात

चोट

इन्सान को जब कोई चोट पहुँचती है वह स्वयं को बचाने की चेष्टा करता है। केवल पत्थर ही चोटों को सहता हुआ चुपचाप पड़ा रहता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (गोरा)

जिसने तुम्हें चोट पहुँचायी है वह तुमसे सबल था या निर्बल? यदि तुम से निर्बल है तो उसे क्षमा कर दो, यदि सबल है तो अपने को कष्ट न दो।

—सेनेका

चोर-चोरी

अनुकरण ही चोरी है, स्वीकरण चोरी नहीं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य में नवीनता)

एक की यदि दूसरा चोरी करे तो जिसकी चोरी हो उसकी भी क्षति और जो चोर है उसका भी नाश।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (विवेक संशय)

चोरहिं चाँदनी रात न भावा।

—तुलसीदास (मानस)

लुब्धानां याचकः शत्रुर्मूर्खाणां बोधको रिपुः।
जारस्त्रीणां पतिः शत्रुश्चौराणां चन्द्रमा रिपुः॥

(लोभियों का बैरी भिक्षुक है, मूर्खों का शत्रु समझाने वाला है, व्याभिचारिणी स्त्रियों का शत्रु पति है और चोरों का शत्रु चन्द्रमा है।

—अज्ञात

चोर अपराधी बन कर छूट जाने से निर्दोष बनकर दंड भोगना बेहतर समझता है।

—प्रेमचन्द

चोरी का माल खाने से छात्र शूरवीर नहीं बनते, दीन बनते हैं।

—महात्मा गांधी

चोर केवल दंड से ही नहीं बचना चाहता, वह अपमान से भी बचना चाहता है। वह दंड से उतना नहीं डरता जितना अपमान से।

—प्रेमचन्द

चोरी का धन कच्चे पारे को खाने के समान है। जैसे कच्चा पारा शरीर में से फूट निकलता है, वैसे ही चोरी का धन है।

—महात्मा गांधी

गोपिकाओं के इससे बढ़कर और क्या सुकर्म होंगे कि कृष्ण ने उनका मक्खन चुराया। धन्य है वह जिसका सब कुछ चुराया जाय, मन और चित्त तक बाकी न रहे।

—स्वामी रामतीर्थ

छल

छल का बहिरंग सुन्दर होता है, विनीत और आकर्षक भी; पर दुःखदायी और हृदय को ऐंठने के लिए।

—जयशंकर प्रसाद (ध्रुव स्वामिनी)

स्पष्टवादी छली नहीं होता।

—चाणक्य

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धा, वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम्।
धर्मः स नो यत्र न सत्यमस्ति, सत्यं न तत्यच्छलमभ्युपैति॥

(जिस सभा में बूढ़े न हों वह सभा नहीं, जो बूढ़े धर्म न कहें वह बूढ़े नहीं, जिस धर्म में सत्य न हो वह धर्म नहीं और जिस सत्य में छल हो वह सत्य नहीं।)

—व्यास

सभी छलों में अपने साथ किया हुआ छल पहला और निकृष्ट होता है।

—बेली

विवुध काज बावन बलिहि, छलो भलो, जिय जानि ।
प्रभुता तजि वश में तदपि, मन तें गई न ग्लानि ।।

—तुलसीदास

पुरुष तहाँ ह्वै करै छर, जहँ कर किए न आँट ।
जहाँ फूल तहँ फूल हैं, जहाँ काँट तह काँट ।।

—मलिक मुहम्मद जायसी (जायसी ग्रंथावली)

छवि

छवि में एक परिप्रेक्षण तत्त्व है, तदानुसार दूर की वस्तु छोटी करके एवं निकट की बड़ी करके आँकनी पड़ती है। यदि ऐसा न हो तो छवि हमें सत्य प्रतीत नहीं होगी।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (समग्र)

छाया

छाया घूंघट डालकर प्रेम की मौन जाति से, विनती भाव से प्रकाश का अनुसंधान करती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

तुम स्वयं को नहीं देख सकते, जो तुम देख रहे हो वह छाया है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर

छायावाद

छाया भारतीय दृष्टि से हमे अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर अधिक निर्भर करती है। ध्वन्यात्मकता, लाक्षणिकता, सौन्दर्यमय प्रतीक-विधान तथा उपचार-वक्रता के साथ स्वानुभूति की निवृत्ति 'छायावाद' की विशेषताएं हैं।

—जयशंकर प्रसाद

छायावाद का कवि धर्म के अध्यात्म से अधिक दर्शन के ब्रह्म का ऋणी है जो मूर्त्त और अमूर्त्त विश्व को मिलाकर पूर्णता पाता है।

—महादेवी वर्मा

कविता के क्षेत्र में पौराणिक युग की किसी घटना अथवा देश-विदेश की सुन्दरी के बाह्य वर्णन से भिन्न जब वेदना के आधार पर स्वानुभूति-मयी अभिव्यक्ति होने लगी तब उसे 'छायावाद' के नाम से अभिहित किया गया।

—जयशंकर प्रसाद

छिद्रान्वेषण

दुर्बलजन तथा अज्ञानी लोग ही हमेशा सबसे अधिक छिद्रान्वेषण किया करते हैं।

—स्वामी रामतीर्थ

दूसरों में दोष न निकालना दूसरों को इतना उन दोषों से नहीं बचाता जितना अपने को बचाता है।

—स्वामी रामतीर्थ

छुआछूत (दे० अस्पृश्यता)

एकै पवन एक ही पाँणी, करी रसोई न्यारी जांनी।
माटी सूं माटी ले पोती, लागी कहौ कहां थूं छोती॥
धरती लीपि पवित्र कीन्हीं, छोति उपाय लीक विचि दीन्हीं।
या का हम सूं कहौ विचारा, क्यूं भव तिरि हौ इहि आचारा॥

—महात्मा कबीर (कबीर ग्रंथावली)

छूत क्या है अछूत लोगों में, क्यों न उनका अछूतपन लखिए।
हाथ रखिए अनाथ के सिर पर, कान पर हाथ मत रखिए॥
क्या उसीसे कढ़ी न गंगा है, बल उसी के न क्या पुत्र बावन।
हैं अपावन अछूत सब कैसे, है भला कौन पांव सा पावन॥

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (चुभते चौपदे)

अपनेहि अंग अछूत करि, पर-अछूत भे लोय ।
जो जैसी करनी करै, तैसी भरनी होय ।।

—दुलारेलाल (दुलारे दोहावली)

छोटे (दे० लघु)

कैसे छोटे नरनु तै सरत बडनु के काम ।
मढ्यो दमामौ जात क्यों कहि चूहे के दाम ।।

—बिहारी (बिहारी रत्नाकर)

"रहिमन' देख बड़ेन को, लघु न दीजिए डारि ।
जहाँ काम आवे सुई, कहा करे तलवारि ।।

—रहीम (रहिमन विलास)

छोटेन सों सोहैं बड़े, कहि 'रहमी' यह रेख ।
सहसन को हय बाँधियत, लै दमरी की मेख ।।

—रहीम (रहिमन विलास)

आड़ बड़े की लेकर छोटा, पलता भी है गलता भी है ।
योग हवा का पाकर दीपक, जलता भी है बुझता भी है ।।

—सागरमल (कुछ कलियाँ : कुछ फूल)

जंजीर

जंजीरें जजीरें ही हैं, चाहे वे लोहे की हों या सोने की, वे सब समान रूप से तुम्हें गुलाम बनाती हैं ।

—स्वामी रामतीर्थ

जगत् (दे० संसार, विश्व, ब्रह्माण्ड)

जिसे हम जगत् या सृष्टि कहते हैं उसका निःसंशय प्रकाश ही उसके अस्तित्व की चरम कैफियत है ।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य विचार)

जगत् में अविश्लेष्य समग्रता का गौरव व्यय करने का मनोभाव जाग उठता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (साहित्य विचार)

जगत् में सर्व साधारण के साथ हमारा साधारण भाव में ऐक्य है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (विशेष)

जगत् में मंगल की प्रतिष्ठा करने से ही सकल स्वार्थ वृत्तिसम्पूर्णतया पराहत होती है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (तीन)

जगत् में स्थिरता आते ही मौत आती है। इस नियम को जिसने अपनाया है। वह स्थिति और लाभ को अस्वीकार करता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (प्राप्ति)

जगत् परिवर्तनशील फेन है जो शांतिरूपी सागर की सतह पर सदैव तैरता रहता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (परिणय)

जब मानव मुसकराया तब विश्व ने उससे प्रेम किया। जब उसने अट्टहास किया तब विश्व उससे भयभीत हो गया।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (परिणय)

जगत् ऐसा असीम सुन्दर है, किन्तु फिर भी इतनी शीघ्र वेकल हो जाता है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (त्याग)

विधाता के रचे इतिहास और मानव की रची कहानी इन दोनों का मेल ही मानव जगत् है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (कहानी)

जगत् कितना मिथ्या है। वह केवल स्वप्न है, केवल मरीचिका है।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (मृत्यु व अमृत)

जगत् के बिना ईश ईश नहीं है, सृष्टि नहीं तो ईश नहीं।

—हेगेल

ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या
(ब्रह्म सत्य है और जगत् मिथ्या।)

—उपनिषद्

जगत् का प्रतीयमान रूप मायाजनित है इसलिए असत्य है। जगत् का वास्तविक रूप ब्रह्म है, इसलिए सत्य है।

—सम्पूर्णानन्द (चिद्विलास)

या जग की विपरीति गति, समझी देखि सुभाव।
कहैं जनार्दन कृष्ण को, हर को शंकर नांव॥

—वृन्द (वृन्द सतसई)

जग माहीं ऐसे रहो, ज्यों जिह्वा मुख माहिं।
घीव घना भच्छन करै, तो भी चिकनी नाहिं॥

—चरणदास (संतसुधासार)

ऐसा यह संसार है, जैसा सेमर फूल।
दिन दस के ब्योहार में, झूठे रंग न भूल॥

—महात्मा कबीर (कबीर वचनावली)

या जग मीत न देख्यो कोई।
सकल जगत अपने सुख लाग्यो, दुख में संग न कोई।
दारा मीत पूत सम्बन्धी सगरे धन सों लागे।
जब ही निरधन देख्यो नरको, संग छाड़ि सब भागे॥

—गुरु नानक

जो पै ईश्वर साँचो जान।
तौ क्यों न जग को सगरे मूरख झूठो करत बखान॥
जो करता साँचो है तो सब कारजूहन है साँच।
जो झूठो है ईश्वर तो सब जगहू जानौ काँच॥
जो हरि एक अहै तो माया यह दूजी है कौन।
'हरीचंद' कछु भेद मिल्यौ न बक्यौ जिय आयो जौन॥

—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (भारतेन्दु ग्रन्थावली)

खोलता इधर जन्म लोचन,
मूंदती उधर मृत्यु क्षण क्षण,
अभी उत्सव औ हास हुलास,
अभी अवसाद, अश्रु, उच्छ्वास,
अचिरता देख जगत् की आप,
शून्य भरता समीर निःश्वास,
डालता पातों पर चुपचाप,
ओस के आँसू नीलाकाश,
सिसक उठता समुद्र का मन,
सिहर उठते उडुगन।

—सुमित्रानंदन पंत (आधुनिक कवि)

मूंदती नयन मृत्यु की रात,
खोलती नव जीवन की प्रात,
शिशिर की सर्व प्रलयंकर वात
बीज बोती अज्ञात।
म्लान कुसुमों की मृदु मुसकान,
फलों में फलती फिर फिर अम्लान,
महत् है, अरे, आत्म-बलिदान,
जगत् केवल आदान-प्रदान।

—सुमित्रानंदन पंत (आधुनिक कवि)

दुनिया मोम की चीज नहीं है और न किताब ही है जिसे पढ़कर खत्म कर सकते हैं। यहाँ जगह-जगह टक्कर खानी पड़ती है और समझौता करना पड़ता है।

—जैनेन्द्रकुमार (परख)

दुनिया सहानुभूति की ही नहीं है, स्पर्द्धा की भी है। शायद दोनों हैं, इसी से वह है।

—जैनेन्द्रकुमार (विवर्त)

अज्ञस्य दुःखौघमयं ज्ञस्यानन्द मयं जगत्।
अन्धं भुवनयन्धस्य प्रकाशंतु सुचक्षुषाम्॥

(जैसे अंधे के लिए जगत् अन्धकारमय है और सुनेत्र वाले के लिए प्रकाशमय है वैसे ही अज्ञानी के लिए जगत् दुःखों का समूह है और ज्ञानी के लिए आनन्दमय है।)

—वराहोपनिषद्

आँधी आती है, बड़ी-बड़ी जोर की आँधी। मालूम होता है सारी दुनिया उड़ जायेगी। लेकिन कुछ रेत और फूंस के सिवाय कुछ नहीं उड़ता है। आँधी आकर चली जाती है और दुनिया अपने काम में लग जाती है।

—जैनेन्द्रकुमार (परख)

कहीं तुम अपने को अपने में सारी दुनिया पाते हो। दूसरे क्षण आते ही तुम दुनिया के निकट एक शून्य जैसा विन्दु भी नहीं हो।

—जैनेन्द्रकुमार (जैनेन्द्र कहा० भाग-६)

दुनिया को सुधारने का मार्ग अपने को सुधारने के अलावा और नहीं है।

—जैनेन्द्रकुमार (प्रस्तुत प्रश्न)

जड़ता

जड़ता निर्दयता की जननी है।

—रस्किन

जन्मभूमि

हंस! गंगा कूल भी अनुकूल तेरे है नहीं;
मानसर पहुँचे विना तू मान सकता है नहीं।
धन्य है अनुरक्ति तेरी, धन्य तेरी शक्ति है;
धन्य तेरी जन्म धरती, धन्य तेरी भक्ति है॥

—रामचरित उपाध्याय (राष्ट्रभारती)

जन्म-भू सी जन्म भू है, और है उपमा नहीं।
खोजते रहिए कभी भी पा नहीं सकते कहीं ॥
जन्मदा माँ है हमारी जो नहीं निःस्वार्थ है।
जन्म भू-सी फिर उसे कहना हमारा व्यर्थ है ॥

—रामचरित उपाध्याय (राष्ट्रभारती)

आजीवन उसको गिनें, सकल अवनि सिरमौर।
जन्मभूमि जलजात के, बने रहें जन भौर ॥
फलद कल्पतरु तुल्य हैं, सारे विटप बबूल।
हरिपद रज सी पूत है, जन्म धरा की धूल ॥

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (हरिऔध सतसई)

स्वर्ग से भी श्रेष्ठ जननी जन्मभूमि कही गई।
सेवनीया है सभी की वह महामहिमामयी ॥

—मैथिलीशरण गुप्त (मंगलघट)

जनता

मानव बहुधा बुद्धि से मार्ग-दर्शन करते हैं, जनता कभी नहीं।

—डीन डब्ल्यू० आर० इंज

जनता शक्तिशाली पुरुष से प्रेम करती है। वह स्त्री की तरह होती है!

—मुसोलिनी

जनता तो धरती माता की तरह है जिस पर कुदाली से घाव होता है लेकिन गेंद का स्पर्श यों ही ऊपर के ऊपर उड़ जाता है।

—विनोबा भावे

जनता तो भावोन्माद की अनुचरी है।

—जयशंकर प्रसाद (इरावती)

जनता क्रोध में अपने को भूल जाती है, मौत पर हँसती है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

जनता अत्यन्त क्षमाशील होती है।

—प्रेमचन्द (रंगभूमि)

लोकमत पर विजय पाने का अर्थ है, अपने सद्विचारों और सत्कर्मों से जनता का आदर और सम्मान प्राप्त करना।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

जनता सहनशील होती है जब तक प्याला भर न जाये, वह जबान नहीं खोलती।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

जनता उत्तेजित होकर आदर्शकारी हो जाती है।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

जनता की दृष्टि में विद्या, बुद्धि और प्रतिभा का उतना मूल्य नहीं होता जितना चरित्रबल का।

—प्रेमचन्द (सेवासदन)

जनता को अधिकारी वर्ग से एक नैसर्गिक द्वेष होता है।

—प्रेमचन्द (प्रारब्ध)

जनता कल्पवृक्ष है, जो भावना आप लेकर जायेंगे, वही आप उससे पायेंगे।

—विनोबा भावे

सर्वसाधारण जनता की उपेक्षा ही एक बड़ा राष्ट्रीय पाप है।

—स्वामी विवेकानन्द

बड़े-बड़े आन्दोलनों, जो व्यक्तियों और श्रेणियों के असली रूप को प्रकट कर देते हैं, जनता राजनीति का पाठ पढ़ती है।

—जवाहरलाल नेहरू

राज महलों की चालबाजियाँ, सभा भवनों की राजनीति, समझौते और लेन-देन का जमाना उसी दिन खत्म हो जाता है, जब जनता राजनीति में प्रवेश करती है।

जनता जो कुछ सीखती है वह घटना-क्रम की पाठशाला में सीखती है। और दुःख-दर्द ही उसका शिक्षक है।

—जवाहरलाल नेहरू

जनता की आवाज ईश्वर की आवाज है।

—कहावत

जननी

जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं।

—वाल्मीकि

जननी का हृदय शिशु की पाठशाला है।

—एच० डब्ल्यू० बीचर

जननी जननी ही है, जिन्दा चीजों में जो सबसे अधिक पवित्र है।

—कॉलरिज

शिशु का भाग्य सदैव उसकी जननी द्वारा निर्मित होता है।

—नेपोलियन

कोमलता में जिसका हृदय गुलाब की कलियों से भी अधिक कोमल, दयामय है, पवित्रता में जो यज्ञ के धुएँ के समान है, कर्तव्य में जो वज्र की तरह कठोर है—वही दिव्य जननी है।

—अज्ञात

जय

विराग मूर्त्तयोऽपि ये, स्वदेश-राग-शोभिताः।
अरण्यवास निःस्पृहाः, जयन्ति ते जना भुवि॥

(स्वयं वैराग्य की प्रतिमा होते हुए भी जो स्वदेश प्रेम से शोभित है और अपने कर्तव्य से च्युत होकर बनवास के लिए उत्सुक नहीं हैं, विश्व में उन्हीं की जय होती है।)

—अज्ञात

जय उसी की होती है जो अपने को संकट में डालकर कार्य सम्पन्न करते हैं। जय कायरों की कभी नहीं होती।

—जवाहरलाल नेहरू

जय ईश्वर की मुस्कान है।

—व्हिटटियर

अक्रोधेन जयेत्क्रुद्धमसाधुं साधुना जयेत्।
जयेत्कदर्यं दानेन जयेत्सत्येन चानृतम् ॥

(क्रोध न करके क्रोध को, भलाई करके बुराई को, दान करके कृपण को और सच से झूठ को जीतना चाहिए।)

—वेदव्यास (महाभारत)

विहातुमुद्यताः सदा परार्थमात्मनो हितं।
अथाभिमान वर्जिता जयन्ति ते जना भुवि॥

(दूसरों के लिए अपने हित को छोड़ने के लिए सदैव तैयार होते हुए भी जो स्वयं गर्व से रहित होते हैं विश्व में उन्हीं की जय होती है।)

—अज्ञात

जल

जल ही औषधि है, जल रोगों का शत्रु है, यही सब रोगों को नष्ट करता है। अतः यह तुम्हारा भी रोग दूर करे।

—ऋग्वेद

अजीर्णे भेषजं वारि जीर्णे वारि बलप्रदम्।
भोजने चामृतं वारि भोजनांते विषप्रदम्॥

(अजीर्ण होने पर जल औषधि है, पच जाने पर जल बल प्रदान करता है। आहार के समय जल अमृत के समान है और आहार के अंत में विष का फल देता है।)

—चाणक्य

जल ने अपने नियन्ता की ओर दृष्टिपात किया और वह पानी पानी हो गया।

—बायरन

अप्स्वरममृतमप्सु भेषजम्।
(जल में अमृत है और जल में औषधियाँ हैं।

—अथर्ववेद

जवानी (दे० यौवन)

नई बीवी का आलिंगन करके जवानी का मजा आ जाता है। रूठी हुई जवानी को मनाने का इससे अच्छा कोई उपाय नहीं कि नया विवाह हो जाये।

—प्रेमचन्द (निर्मला)

जवानी में सहृदयता कुछ अधिक होती है।
जवानी में कौन नहीं सुन्दर होता।

—प्रेमचन्द (कायाकल्प)

जवानी दीवानी होती है।

—प्रेमचन्द (प्रतिज्ञा)

जवानी जोश है, बल है, दया है, साहस है, आत्म विश्वास है, गौरव है, और सब कुछ जो जीवन को पवित्र उज्ज्वल और पूर्ण बना देता है। जवानी का नशा घमण्ड है, निर्दयता है, स्वार्थ है, शेखी है, विषय वासना है, कटुता है और सब कुछ जो जीवन को पशुता, विकार और पतन की ओर ले जाता है।

—प्रेमचन्द (घासवाली)

जवानी के खजाने में जिसे भाग्य उज्ज्वल पराक्रम के लिए सुरक्षित रखता है, असफलता का शब्द नहीं है।

—लिटन

देश और मानव के लिए जवानी आशा, साहस एवं शक्ति का काल है।

—डब्ल्यू० आर० विलियम्स

यौवनं जीवितं चित्तं, छाया लक्ष्मीश्च स्वामिता।
चंचलानि षडेतानि, ज्ञात्वा धर्मरतो भवेत्॥

(यौवन, जीवन, मन, देह की छाया, धन और स्वामित्व—ये छहों चंचल हैं अर्थात् ये स्थिर होकर नहीं रहते।)

—अज्ञात

मा कुरु धन-जन-यौवनगर्वं, हरति निमेषात् कालः सर्वम्।
मायामयमिदमखिलं हित्वा, ब्रह्मपदं प्रविशाशु विदित्वा॥

(इस धन-यौवन का गर्व न कर, काल इसे पलक मारते हर लेता है। इस मायावी विश्व को छोड़कर शीघ्र ही ब्रह्मपद में प्रविष्ट हो।)

—अज्ञात

सदा न फूलै तोरई, सदा न सावन होय।
सदा न यौवन थिर रहे, सदा न जीवै कोय॥

—अज्ञात

रहती है कब, बहारे जवानी तमाम उम्र।
मानिन्द बूये गुल, इधर आई उधर गई॥

—अज्ञात

नदी की बाढ़ें, वृक्षों के पुष्प और चन्द्रमा की कलाएँ क्षीण होकर फिर से आती हैं, किन्तु देहधारियों का यौवन नहीं आता।

—अज्ञात

यह सच है और बहुत प्रसिद्ध है कि जैसे वृद्धावस्था में बुद्धिमत्ता होती है वैसे ही यौवन में अविवेकिता होती है।

—सिसरो

जागरण

जागरण का अर्थ है कर्मक्षेत्र में अवतीर्ण होना। और कर्मक्षेत्र क्या है? जीवन संग्राम।

—जयशंकर प्रसाद (चन्द्रगुप्त)

शीघ्र सोनेवाला और प्रातःकाल शीघ्र उठनेवाला मानव आरोग्यवान्, भाग्यवान् और ज्ञानवान् होता है।

—फ्रैंकलिन

जालसाज़

जालसाज जो जाल फैलाते हैं उसमें बहुत जल्द वे स्वयं अपने को ही ऊपर से नीचे तक अधिक फैला लेते हैं।

—रवीन्द्रनाथ ठाकुर (जासूस)

जाति

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुणकर्मविभागशः।

(मैंने गुण और कर्म के अनुसार ही जाति संख्या की स्थापना की है।)

—श्रीकृष्ण (भगवद्गीता)

जो जाति जब तक मरना जानती रहेगी, उसको तभी तक इस पृथ्वी पर जीने का अधिकार रहेगा।

—जयशंकर प्रसाद

हमारी जाति-प्रथा मनुष्यों का सर्वश्रेष्ठ श्रेणी विभाग है। क्योंकि हर एक जाति में शास्त्र नारायण का अंश बतलाया है। जाति की निन्दा भी कहीं नहीं की गई। जाति निन्दनीय नहीं।

—सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

वर्तमान काल में जाति-प्रथा जिस रूप में प्रचलित है उसका एकान्त रूप से विनाश करना ही होगा। यदि भारतीय जनता को नवीन जीवन प्राप्त करना है तो उसे वर्ण-भेद के वर्तमान स्वरूप को मिटा देना होगा, क्योंकि वह उन्नति के सभी विभागों में भयंकर रूप से बाधा समुपस्थित कर रहा है।

—डॉक्टर भगवानदास

जन्म से नहीं अपितु कर्म से ही मानव शूद्र या ब्राह्मण होता है।

—महात्मा बुद्ध

जाति-सेवा में शरीर को घुलाना पड़ता है, रक्त को जलाना पड़ता है। यही जाति-सेवा का उपहार है।

प्रेमचन्द (प्रेम पचीसी)

जो रहती है जाति जगत में, मरने को तैयार।
वही अमरता का पाती है, ईश्वर से अधिकार॥

—रामनरेश त्रिपाठी (मिलन)

जाति न काहू की प्रभु जानत। भक्तिभाव हरि जग जुग मानत।

—सूरदास (रामचरित्रावली)

क्यों लुच्चे लुंगाड़े नीच, ले जाते हैं वधुएँ खींच?
तन-मन से तुम निर्बल आज, रख सकते हो कैसे लाज?

—मैथिलीशरण गुप्त (हिन्दू)

जो आघात वही प्रतिघात, यह हो तो स्वाभाविक बात।
हिन्दू, सजग रहो सब ओर, लगे धर्म धन के हैं चोर॥

—मैथिलीशरण गुप्त (हिन्दू)

नित बहुत दौड़धूप जी से कर।
जो गिरी जाति को उठा देवें।
चाहिए पाँव चाह से उनका
चूम लें आँख से लगा लेवें॥

—अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (चुभते चौपदे)

सोकर मृतक-समान सतत मन मार नहीं रह सकती।
कोई जीवित जाति सदा अपमान नहीं सह सकती॥

—रामखेलावन वर्मा (चन्द्रगुप्त मौर्य)

यह न मानना कभी कुलीन के कुलीन होता,
मन मलीन कीचड़ में सरोज रोज खिलता है।
वर्ष भर तिमिर पोती काजल-सी रजनी से,
सुधा भरी चाँदनी से शरद हास मिलता है।

—उदयशंकर भट्ट (कणिका)

हमारा एकमात्र जागृत देवता हमारी जाति है।

—विवेकानन्द (उत्तिष्ठत, जागृत)

जाति सेवा ऊसर की खेती है। वहाँ बड़े-से-बड़ा उपहार जो मिल सकता है। वह है गौरव और यश, पर वह भी स्थायी नहीं, इतना अस्थिर कि एक क्षण में जीवन भर की कमाई पर पानी फिर जाय।

—प्रेमचन्द

अनुक्रमणिका

ग्रंथकारों की नामावली